वर्ष 50 * अंक 06 * जून 2023

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

वर्ष 50 • अंक 06 • जून 2023 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी

ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200

Fax : 01127608215

E-mail : hduniya.hindi@nirankari.org

Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले

5. सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

6. सम्पूर्ण अवतार बाणी

12. चित्रकथा

23. अनमोल वचन

34. किट्टी

38. कभी न भूलो

44. पढ़ो और हँसो

48. आपके पत्र मिले

50 रंग भरो

कहानियां

8. अपना-अपना नजरिया
– अर्चना सोगानी

9. सोनी मम्मा और मुनमुन
– डॉ. राकेश चक्र

19. कुएँ में गिरा चाँद ...
– कमल सोगानी

24. फलों की दावत
– फारूख हुसैन

30. कला पारखी कौन?
– विभा वर्मा

32. चोरी का दंड
– दीपांशु जैन

42. सम्राट की महानता
– श्यामसुन्दर 'सुमन'

46. सच्चाई बालिका ...
– रामअवध राम

विशेष/लेख

16. सूती परिधान
– अर्चना

18. कोई गोरा, कोई काला क्यों होता है?
– अर्चना जैन

20. मृगमरीचिका क्या है?
– पुष्पेश कुमार

22. पर्यावरण को सभी बचाएं
– सुमेश निषाद

28. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
– घमंडीलाल अग्रवाल

40. कमाल की है डाल्फिन
– परशुराम संबल

कविताएं

7. ऐसा वर दो
– घमंडीलाल अग्रवाल

7. प्रार्थना
– संजय कुमार चतुर्वेदी

17. दिन आये गरमी के
– गफूर 'स्नेही'

21. पर्यावरण बचाओ
– हरजीत निषाद

21. पेड़
– हरप्रसाद 'रोशन'

29. जल का सदुपयोग
– गफूर 'स्नेही'

29. पानी को सहेजें
– राजकुमार जैन 'राजन'

39. फलों के राजा आम
– गोविन्द भारद्वाज

39. आम
– संजय कुमार

47. बाल-सुरक्षा
– डॉ. परशुराम शुक्ल

स्वयं पर नियंत्रण रखें

सभी छात्र परिश्रम करते हैं, परीक्षा देते हैं और अच्छे परिणाम की आशा भी रखते हैं। अनेकों बार परिश्रम के बाद परिणाम में मनचाही सफलता प्राप्त कर भी लेते हैं और कई बार अपेक्षा के विपरीत भी परिणाम आ जाता है। अपेक्षा के विपरीत परिणाम आने पर वे क्षुब्ध हो जाते हैं और निराश भी। कुछ तो बुद्धि और विवेक पर संयम भी नहीं कर पाते। परिणाम किसी भी तरह का हो अगर उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया जाए तो आने वाली कई मुसीबतों से बचा जा सकता है। दिमाग अगर ठंडा रखकर कोई भी कार्य किया जाए तो परिणाम हमेशा ही उचित और अच्छे होते हैं।

एक राजा अपने दरबारियों के साथ महल के प्रांगण में सर्दियों की धूप में बैठे विचार-विमर्श कर रहे थे। एक व्यक्ति ने राजा के समक्ष आने की अनुमति मांगी। जब व्यक्ति को अनुमति मिली तो वह आया और उसने राजा के समक्ष दो हीरे जड़ी अंगूठियां रख दीं और बोला– इसमें एक असली और एक नकली है। वे हूबहू एकदम एक जैसी दिख रही थीं। उसने दोनों अंगूठियां वहाँ पड़ी मेज पर रख दीं और बोला– मैंने अनेकों जगह से इनका परीक्षण करवाया है परन्तु यह कोई नहीं जान सका कि कौन-सी अंगूठी असली है और कौन-सी नकली है। अगर आप इसका निर्णय कर दें कि असली कौन-सी है तो वह आपके खजाने में दे दी जाएगी। इनके निरीक्षण का केवल एक ही अवसर दिया जाएगा। राजा ने चुनौती स्वीकार कर ली।

राजा ने स्वयं निरीक्षण कर देखा तो वह स्तब्ध रह गया और निर्णय नहीं कर सका। उसने दरबारियों को बारी-बारी से अंगूठियों को परखने को कहा परन्तु वे भी असफल रहे। जौहरी तक पहचान नहीं कर पा रहे थे। राजा तो आशा छोड़ चुका था। इतने में एक दृष्टिहीन व्यक्ति दरबार में आया और राजा से बोला– महाराज! एक अवसर मुझे भी दिया जाए। इस पर राजा ने उसको अनुमति दे दी। अब दृष्टिहीन व्यक्ति ने दोनों अंगूठियों को बारी-बारी से हाथ में लिया और क्षणभर में ही उसने बता दिया कि अमुक अंगूठी असली है। उसके उत्तर से वह व्यापारी भी सहमत हुआ। फिर राजा ने उस व्यक्ति से पूछा कि इतने समझदार, जानकार इसका उत्तर नहीं दे पाए तो तुमने कैसे बता दिया कि कौन-सी अंगूठी असली है।

उस दृष्टिहीन व्यक्ति ने कहा– महाराज! जब मैंने असली अंगूठी को हाथ से छुआ तो वह अपने स्वभाव के अनुसार ठंडी थी। नकली अंगूठी वह थी जो जरा-सी धूप लगने से गर्म हो रही थी। इस बुद्धिमत्ता पर उस व्यक्ति को पुरस्कृत किया गया।

साथियों! जो भी व्यक्ति असली हीरे की तरह अपने स्वभाव में स्थित रहता है अर्थात् स्थिति कैसी भी हो परन्तु अपने मन को डांवाडोल नहीं होने देता और जो किसी से भी गुण ग्रहण करने की कला जानता है, वह हमेशा ही सफल होता है। जो इच्छानुसार परिणाम न आने पर क्षुब्ध होते हैं, अपने धैर्य को कायम नहीं रख पाते, वे सफल होकर भी असफल माने जाते हैं।

हम हमेशा अपने आप पर अपना नियंत्रण रखें। हर परिस्थिति में धैर्य, शान्ति बनाएं रखें और जो भी परिणाम आए उसे प्रभु का प्रसाद समझकर ग्रहण करें।

– विमलेश आहूजा

सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

- भक्ति के तीन सोपान हैं– सेवा, सुमिरण व सत्संग इन्हीं पर आधारित होकर सहज और सरल भक्ति की जा सकती है।
- एक-दूसरे के साथ सद्भाव रखें और प्यार का वातावरण विकसित करें। मानवता को मजबूत करें।
- भक्त दुनियावी जिम्मेदारियों को निभाते हुए भक्ति करते हैं। विश्व भर के लिए सुख, चैन, अमन की प्रार्थना करते हैं।
- सत्संग करना ही काफी नहीं, बल्कि कल्याणकारी शिक्षाओं को जीवन में अपनाना भी होगा। सत्संग की मर्यादा का पालन करते हुए निरंकार को मन में बसाकर अपनी भक्ति को परिपक्व करें। कैसी भी परिस्थिति हो, हमेशा आधार इस एकरस रहने वाले निरंकार का ही होना चाहिए।
- बेहतर संसार बनाने के लिए हमारा यह दायित्व है कि प्रभु ने हमें जो सुन्दर धरती प्रदान की है इसकी सुन्दरता को बरकरार रखें। इसी प्रकार मन को स्वच्छ रखने के लिए परमात्मा के अहसास के साथ जीवन का सफर तय करना होगा।
- स्कूल में परीक्षा के दौरान देखा जाता है कि जब तक अध्यापक की नज़र परीक्षार्थियों पर होती है वे नकल करने से बचते हैं। इसी प्रकार जब यह अहसास होता है कि परमात्मा हमें हर पल देख रहा है तो हम गलत कार्य करने की चेष्टा कर ही नहीं सकते।
- सुमिरण एक पवित्रता है, हम अपने आपको, अपने मन को इस पवित्र निराकार-दातार से जितना ज्यादा जोड़ेंगे उतनी ही हमारी वाणी भी पवित्र होगी और हमारे भाव में पवित्रता होगी।
- हमारी निगाह जब तक अपने स्वयं के ऊपर केंद्रित है कि हम अपने आपको ठीक रखें तो पूरा संसार ही ठीक हो जायेगा क्योंकि– 'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।' अगर हम खुद अच्छे हैं तो हमें हर कोई अच्छा लगेगा।
- प्यार, आदर-सत्कार, नम्रता, करुणा, दया, सहनशीलता से मुकम्मल होकर इन्सान बनकर, स्वार्थ त्याग कर, एक समर्पित जीवन जीना ही सफल जीवन है।
- परमात्मा को हम चाहे किसी भी नाम से पुकारें, इसका अस्तित्व तो एक ही है। यह ब्रह्मांड के कण-कण में समाया हुआ है। हमारे शरीर में जो आत्मा है, यह भी इसका ही अंश है।
- सन्तों का तो निरंकार से सदैव ही सच्चा प्रेम रहा है। उनका हृदय तो निरंतर प्रभु-भक्ति में तल्लीन रहता है। भक्त दुनियावी उपलब्धियों की प्राप्ति होने पर भी निरंकार को ही प्राथमिकता देते हैं।

हमारे पवित्र ग्रंथ

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 278

अपणी ख़बर न लैन्दा मूरख लोकां नूं समझान्दा ए।
वेखो बन्दा जुए अन्दर जनम हारदा जान्दा ए।
सचया साहिबा बख्श लईं इस बन्दे भुल्लण वाले नूं।
चरनां नाल लगाईं रक्खीं माया दे मतवाले नूं।
आप कदे कोई पार नहीं होन्दा एह चाहे तां बेड़ा पार।
अवतार गुरु दी शरनीं पै के बन्दा लैन्दा जनम संवार।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि दुनिया में माया भी है और ब्रह्म भी। माया के पीछे बेतहाशा भागने वाले माया के मतवालों को अपनी स्वयं की ख़बर तक नहीं होती पर वे प्राय: लोगों को समझाते हुए ही नज़र आते हैं। उनके अन्दर ब्रह्म क्या है और ब्रह्म का बोध कैसे होगा? इस विषय में जानने-समझने की कोई रुचि नहीं होती। सन्तों-महापुरुषों ने ऐसे लोगों को सचेत करते हुए उन्हें मूर्ख तक कहा है।

मूर्ख वह है जो ज्ञान अर्जित किए बिना व्यर्थ का घमंड करे अथवा निर्धन होकर भी अपनी गरीबी दूर करने की बजाय केवल बड़ी-बड़ी बातें ही करता रहे। ऐसे व्यक्तियों का जीवन कभी सार्थक नहीं हो पाता क्योंकि वो अपनी कमियों की ओर ध्यान न देकर दूसरों को समझाने में ही लगे रहते हैं। लेकिन मूर्ख व्यक्ति भी अगर बुद्धिमान का संग करता है तो वह भी एक दिन बुद्धिमान बन जाता है और अपनी बिगड़ी बात संवार लेता है। जिस प्रकार जुआ खेलने वाला जुआरी अपना धन, मान-सम्मान सब कुछ गंवा बैठता है। उसी प्रकार माया का मतवाला भी अपना बहुमूल्य जन्म गंवाकर एक दिन संसार से चला जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी इस परमपिता-परमात्मा, इस सच्चे साहिब से प्रार्थना करते हुए कह रहे हैं कि हे प्रभु! माया के मतवाले इन भुल्लणहारों को क्षमा कर दो। इन्हें बख्श लो। इन्हें अपने चरणों से लगा लो। संसार की नज़र में सांसारिक उपलब्धियां प्राप्त कर लेने वाला भले ही लोगों का मान-सम्मान प्राप्त कर ले पर सच्चा साहिब तो यह परमात्मा ही है। यही हमारी भूलों को बख्शने वाला है। ऐसा व्यक्ति जो माया के प्रति अत्यधिक लगाव रखता है वह अज्ञानता में ही पड़ा रहता है। लोगों को अपने निज स्वरूप को जानने का भी ध्यान नहीं रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी बहुमूल्य मानव जन्म संवार लेने का आग्रह करते हुए कह रहे हैं कि इस भवसागर से अगर कोई अपने आप पार होना चाहे तो यह सम्भव नहीं है। जब यह प्रभु चाहे तभी बेड़ा पार होगा। सन्त-महात्मा हमेशा यही सुमति प्रदान करते हैं कि इन्सान तू समय रहते सच्चे सत्गुरु की शरण में आ जा और अपनी हारी हुई बाजी जीत ले। अपनी ख़बर न लेने वाली जो मनमति तू दिखा रहा है उसको त्याग कर गुरु से सुमति प्राप्त कर और अपना जन्म संवार ले।

भावार्थ : हरजीत निषाद

ऐसा वर दो

बाल कविता : घमंडीलाल अग्रवाल

ऐसा वर दो भगवान हमें,
छू नहीं सके अभिमान हमें।
हम पढ़-लिखकर विद्वान बनें,
नित मिले मान-सम्मान हमें।।

तुम सक्षम हो, तुम बलशाली,
तुम करना मेरी रखवाली।
हम छोटे-छोटे बालक हैं,
तेरी आज्ञा के पालक हैं।
ऐसा वर दो भगवान हमें,
हो सही-गलत का ज्ञान हमें।।

भाईचारा हमको प्यारा,
सद्‌भावों का गूंजे नारा।
आपस में प्रेम करें सबसे,
न वैर किसी से हो अब से।
ऐसा वर दो भगवान हमें,
पथ कठिन लगे आसान हमें।।

हर ओर कीर्ति पल-पल फैले,
धुल जाएं जो हैं मन मैले।
यह वसुधा सुख से भर जाए,
दुख नहीं नज़र बिल्कुल आए।
ऐसा वर दो भगवान हमें,
सब कहें देश की शान हमें।।

प्रार्थना

बाल कविता : संजय कुमार चतुर्वेदी

प्रभु जी सुन लो मेरी विनती,
याद हो जाये सारी गिनती।

अक्षर सब हो जायें याद,
समय न मेरा हो बरबाद।

अच्छे काम करूँ मैं जग में,
यश फैले सारे ही नभ में।

मात-पिता, गुरु का सम्मान,
सारे जग में हो गुणगान।

करूँ देश का ऊँचा नाम,
जीवन में मैं बनूं महान।

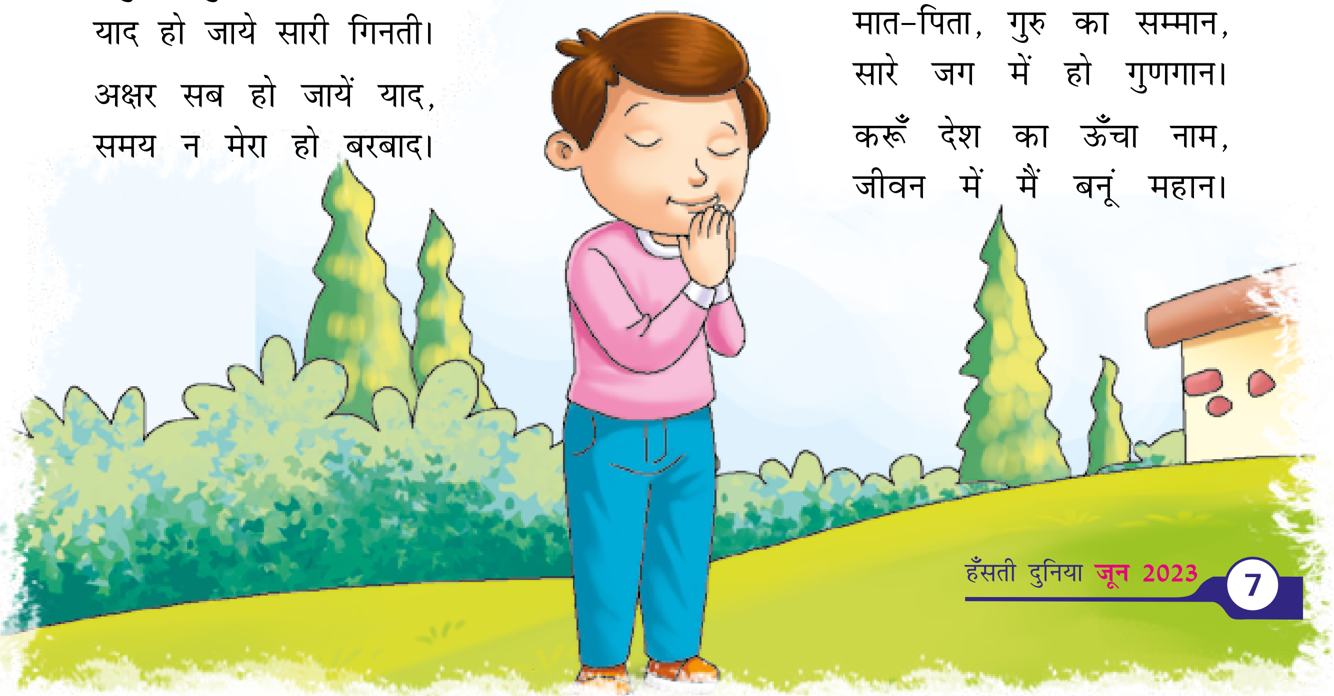

अपना-अपना नजरिया

बोध कथा : अर्चना सोगानी

एक थे महात्मा। जगह-जगह भ्रमण किया करते और लोगों को ज्ञान के उपदेश दिया करते। लोगों की समस्याएं भी सुनते और उनका सही ढंग से समाधान भी किया करते।

ऐसे ही एक बार वे घूमते-घामते एक छोटे से गाँव में पहुँचे। लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया। स्वागत के उपरांत गाँव के एक सज्जन ने उनसे कहा- 'स्वामीजी! मैं बड़ा परेशान हूँ, मैं लोगों के समक्ष जो भी सही बात कहता हूँ, वे उसे नहीं मानते? आखिर लोग मेरी बात को किस कारणवश सही नहीं मानते?'

यह सुनकर महात्मा ने कहा- चलो यह मान लेते हैं, तुम जो कहते हो वह ही सही होता है, लेकिन अब ये बताओ- हिमालय किस दिशा में हैं?

'उत्तर में'- उसने जवाब दिया।

इस पर महात्मा ने कहा- यदि यही प्रश्न किसी चीन देश के निवासी से पूछे तो उसका क्या जवाब होगा?

वह बोला- दक्षिण में।

इस तरह का जवाब सुनकर महात्मा ने कहा- लेकिन तुम तो कहते हो उत्तर में, भला फिर हिमालय दक्षिण में कैसे हो गया? तुम्हारी बात सही है तो उसकी बात भी कैसे सही हो गयी? कोई सही तर्क अब तुम ही बताओ?

वह व्यक्ति कुछ न बोला। चुपचाप खड़ा रहा।

तभी महात्मा ने मुस्कुराते हुए कहा- अब मेरी बात तुम जरा ध्यान से सुनो और समझो। हिमालय तुम्हारी अपेक्षा उत्तर दिशा में है। चीन के व्यक्ति की अपेक्षा दक्षिण में है। इसलिए तुम सही हो, वह भी सही है। यह अनेकान्त का दृष्टिकोण है। इससे हठ की स्थितियां टल जाती है। व्यर्थ के क्रोध की स्थितियों को टाला जा सकता है।

महात्मा की बात से वह व्यक्ति बड़ा प्रभावित हुआ और ज्ञान की एक नई बात ग्रहण कर अपने घर की ओर चल पड़ा। ❖

सोनी, मम्मा और मुनमुन

बाल कहानी : डॉ. राकेश चक्र

कुमाऊँ में सिटोली का पूरा जंगल आज बहुत खुश था। उसका कारण था कि कुक्कू पंछी के एक बच्चे को एक नन्ही चिड़िया फुटकी अपने चोंच में ला-लाकर भोजन खिला रही थी। कुक्कू को पहाड़ के लोग कफुवा भी कहते हैं तथा फुटकी को वैज्ञानिक भाषा में ऐशी प्रीनिया कहते हैं।

पेड़ों पर खिलते हुए पुष्प आनन्दमग्न थे। वह कीटों को अपनी ओर आकर्षित कर लुभा रहे थे। उन पर भौंरे, तितलियां, मधुमक्खियां व अन्य कीट मंडराकर रसपान कर रहे थे।

कफुवा चिड़िया का नाम मम्मा था। उसने फुटकी के घोसले में एक नन्हा-सा अंडा दिया। फुटकी को प्यार से सभी सोनी कहते। वह सभी की हमेशा मदद करती रहती। इसलिए सभी उसे प्यार करते।

इसी अंडे से सुन्दर से बच्चे का जन्म हुआ। जिसका नाम मम्मा और सोनी ने मुनमुन रखा। मुनमुन दोनों का स्नेह पाकर बहुत खुश थी। दोनों ही उसके लिए अच्छा-अच्छा मनपसन्द भोजन लाकर खिलातीं।

आमतौर से कफुवा अपना घोसला नहीं बनाती है। वह दूसरों के घोसले में ही अपने अंडे देती है। मम्मा और सोनी की बहुत अच्छी दोस्ती थी।

मम्मा बहुत स्वच्छंद स्वभाव की थी। उसने घोसला बनाकर घर नहीं बसाया। वह कभी इस डाल पर सो जाती, कभी उस डाल पर। जबकि सोनी ने उससे कहा, 'प्यारी दोस्त तुम एक घर

बनाकर अपना घर बनाकर अपना घर बसा लो। उसमें आराम से रहना और अंडे देकर बच्चे दे दिया करना।'

लेकिन मम्मा ने आलस्य और प्रमाद के कारण कहा, 'मैं घर बसाकर क्या करूँगी बहन? मैं तो स्वच्छंद, स्वतंत्र विचारों की हूँ। मैं आजादी से घूमना-फिरना चाहती हूँ। कौन घर बनाने का झंझट करे? मुझे घर बसाना बंधन लगता है। मेरे खानदान में तो किसी ने भी घर नहीं बसाया। घर बसाने से जिम्मेदारी बढ़ जाती है। तुम तो मेरी पक्की दोस्त हो। मैं तो तुम्हारे घोसले में ही अंडे दे दिया करूँगी।'

जब सोनी ने यह सुना तो बोली, 'बहन तुम्हारी मर्जी। लेकिन एक बात जान लो कि आलस्य, प्रमाद और स्वच्छंदता एक दिन अपनी जान के ही शत्रु बन जाते हैं।'

एक दिन आसमान में घोर घटाएं छाई हुई थीं। ऐसा लग रहा था कि तूफान आने वाला है। तेज बारिश और ओले गिरने वाले हैं। मम्मा तो पूरी तरह स्वच्छंद थी ही। वह अपने मन की मालिक थी। किसी की कुछ नहीं सुनती थी। मम्मा ने ठंडी-ठंडी हवा चलते देखी तो वह आसमान की सैर करने चली गई। मुनमुन और सोनी ने मना भी किया कि लग रहा है तेज बारिश और तूफान आने वाला है। मत जाओ आसमान की सैर करने, लेकिन मम्मा नहीं मानी।

हुआ भी सच में ऐसा ही जैसा कि बिना सोच-समझकर कार्य करने वालों के साथ अक्सर होता है।

मम्मा तेज हवाओं के साथ आसमान में मस्ती से उड़ रही थी कि तभी तेज तूफान आया और बारिश के साथ बादलों से बड़े-बड़े ओले गिरने लगे। मम्मा जब तक संभलती तब तक तो एक ओला ऐसा गिरा कि उसने मम्मा को गहरी नींद में ही सुला दिया।

पूरी रात झमाझम बारिश होती रही।

अगले दिन प्रात:काल तक मम्मा नहीं लौटी। मम्मा जब भी सैर करने जाती थी। वह शाम तक अपनी दोस्त सोनी के पास अवश्य लौटकर आ जाती थी।

मुनमुन ने पूछा, 'प्यारी मौसी, मेरी माँ अभी तक लौटकर नहीं आई। सब ठीक तो है न।'

सोनी ने मुनमुन को प्यार करते हुए कहा, 'बेटी मुनमुन कल बहुत तेज तूफान आया था। खूब वर्षा और ओले गिरे थे। मैंने और तुमने तो मना किया था मम्मा से आसमान में

सैर करने के लिए लेकिन मम्मा नहीं मानी थी। लगता है कि वह अब कभी लौटकर नहीं आएगी। बस ईश्वर ही उसे बचा सकते हैं। जब तक वह लौटकर नहीं आती मैं ही प्यारी मुनमुन अब तुम्हारी देखभाल और पालन-पोषण करूँगी। जब तक तुम उड़ने लायक नहीं हो जाती।'

यह सुनकर मुनमुन उदास हो गई और रोने लगी। सोनी ने उसे बहुत सांत्वना दी। उसे प्यार से सहलाया। पेड़ पर बैठे पंछी भी मुनमुन को सांत्वना देने लगे।

सोनी ने समझाया, 'प्यारी मुनमुन मैं तुम्हें अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँगी। शायद तुम्हें भूख लगी होगी। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तुम्हारी माँ सकुशल लौटकर आ आए। मैं तुम्हारे लिए कुछ भोजन चुगकर लाती हूँ।

मुनमुन को सभी पंछी स्नेह दे रहे थे। सोनी मुनमन को भोजन लाकर खिलाने लगी थी। पूरा जंगल यह देखकर आज बहुत खुश था। ❖

क्या आप जानते हैं ?

- तानसेन के गुरु हरिदास थे।
- सिकन्दर के गुरु का नाम अरस्तू था।
- कोलम्बिया देश का नाम क्रिस्टोफर कोलम्बस के नाम पर रखा गया है।
- विश्व का सबसे तटस्थ देश स्विट्जरलैंड है जो किसी युद्ध में भाग नहीं लिया।
- सबसे बड़ा शहर न्यूयार्क शहर अमेरिका में है।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

माँ-पिता जी देखिए, मुझे परीक्षा में प्रथम स्थान मिला है।
एक दिन गाँव में एक शेर घुस आया। शेर को देखकर लोग इधर-उधर भागने लगे।
देखो देखो, वहाँ शेर है। चलो सब अपने-अपने घरों में, कहीं शेर हमला न कर दें।
शेर को लक्ष्मण ने देखा तो उसने अपने पिता जी से कहा-पिताजी, क्यों न हम वन विभाग को शेर की जानकारी दे दें, ताकि वे इसे ले जाए।
हाँ, बेटा तुम सही कह रहे हो।

हैलो! सर हमारे गाँव में एक शेर आ गया हैं। जिससे सभी भयभीत है; कृपया उसे पकड़कर ले जाए।
वन-विभाग के कर्मचारी शेर को बंधक बनाकर पिंजरे में ले जाते हैं।
जैसा कि आप सभी जानते हैं, कल गाँव में क्या हआ था? लेकिन लक्ष्मण की सूझबूझ से आज हम सुरक्षित है।
एक बार स्कूल से लौटते समय लक्ष्मण देखता है कि एक आदमी घायल अवस्था में कराह रहा है। लक्ष्मण लोगों की सहायता से उसे अस्पताल पहुँचाता है।

अगले दिन
अगले दिन समाचार पत्र में घायल व्यक्ति की तस्वीर छपती है, जिससे पता चलता है कि वह शिक्षा विभाग में एक सरकारी अफसर है।
लक्ष्मण बेटा, तुम बहुत समझदार हो जिस तरह से तुमने मेरी जान बचाई, उसके लिए मैं तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूँ। मैं तुम्हें इस कार्य हेतु पुरस्कार दूंगा।
स्कूल में प्रधानाचार्य लक्ष्मण को पुरस्कार प्रदान करते हैं।
शिक्षाः- हमें सदैव अपनी सूझबूझ से दूसरों की मदद करने को तैयार रहना चाहिए।

गर्मियों में सेहत के रखवाले : सूती परिधान

चिलचिलाती गर्मियों में सूती परिधान हमारे शरीर को सचमुच नया लुक देते हैं साथ ही ये शरीर को गर्मी के प्रकोप से भी बचाते हैं। ये परिधान त्वचा को प्राकृतिक ठंडक प्रदान करते हैं।

सूती परिधान (कॉटन) बिल्कुल 'एयर कंडीशनर' की तरह हैं। शरीर के अनुकूल, मौसम के अनुकूल। यूं यह त्वचा को एलर्जी से भी बचाता है, यानी स्वास्थ्य के अनुकूल भी होता है। जो लोग अस्थमा से पीड़ित होते हैं, उनके लिए सूती खासतौर पर फायदेमंद होता है क्योंकि सूती कृत्रिम रसायनों, पेट्रो उत्पादों से नहीं बनता। इसलिए सूती में किसी तरह की एलर्जी का खतरा नहीं होता है।

गर्मियों में पसीने की दुर्गन्ध से बचने के लिए अपने पहनावे पर भी विशेष ध्यान दें। शरीर से चिपकने वाले कपड़े न पहने, न ही गीले व मैले कपड़े पहने, जीवाणुओं के प्रभाव से ये अधिक दुर्गन्धयुक्त हो जाते हैं। अतएव सूती तथा ढीले वस्त्र पहने ताकि पसीना हवा में उड़ता रहे।

गर्मियों में सिन्थेटिक परिधानों को न पहने क्योंकि इन्हें पहनने से पसीना अधिक आता है। ऐसे कपड़ों से शरीर तक हवा नहीं पहुँच पाती। जहाँ तक सम्भव हो हल्के रंग के सूती कपड़े ही पहने, गहरे रंग के कपड़ों में गर्मी ज्यादा लगती है।

पहने हुए मैले व गीले वस्त्रों को यूं ही उतारकर अलमारी में न रखें क्योंकि पसीने से गीले वस्त्रों पर जीवाणु अतिशीघ्र आक्रमण करते हैं जिसके परिणामस्वरूप दुर्गन्ध उत्पन्न होती है। अतः गर्मियों में हमेशा साफ स्वच्छ, धुले हुए कपड़े ही पहने, उन्हें बिना धोए कभी भी अलमारी में न रखें।

पसीने को कभी भी हाथ से साफ न करें। पसीना पोंछने के लिए स्वच्छ सूती रूमाल का प्रयोग करें। ❖

प्रस्तुति : अर्चना

दिन आये गरमी के

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

दिन आये गरमी के,
धूप की गहमागहमी के।
लू के कोड़े बरसाता,
सूरज की बेरहमी के।।

पानी होता जाता कम,
पानी बचाना हुआ धरम।
सभी ओर है यही पुकार,
सभी ओर ये परचम।।

अब हरी ककड़ी तरबूज,
अंगूर संतरा व खरबूज।
दोपहर लू का खतरा,
सुबह शाम ही है महफूज।।

सैर सपाटा पर्वत का,
दौर है लस्सी शर्बत का।
स्वाद कुल्फी आइसक्रीम,
बर्फ गले की हिम्मत का।।

टमाटर

बाल कविता : डॉ. दिनेश चमोला

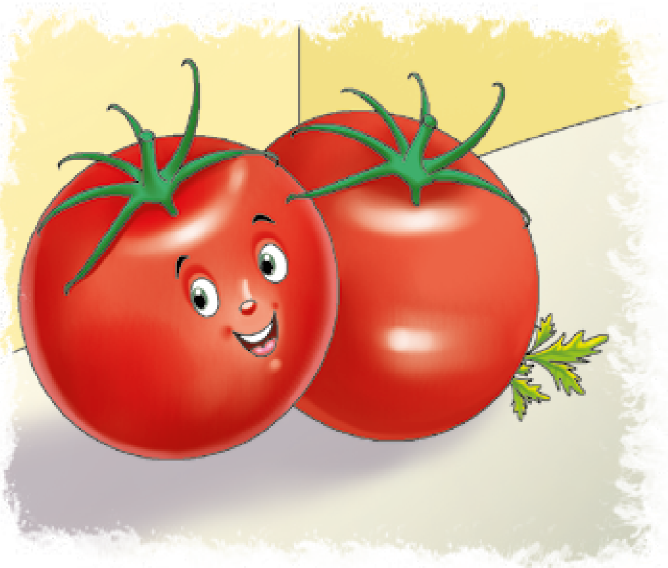

आलू, मूली, गोबी, शलजम
और न मेथी, गाजर,
किंतु रहूँ हर तरकारी में,
मैं हूँ लाल टमाटर।

सूप बना लो, सॉस बना लो
या सलाद में डालो,
अगर तुम्हें तंदुरुस्त है रहना,
पौध हमारी पालो।।

कोई गोरा, कोई काला क्यों होता है?

लेख : अर्चना जैन

मनुष्य की त्वचा में दो प्रकार के रंजक कण 'मिलेनिन' पाए जाते हैं। एक तो भूरे-काले रंग के यूमिलेनिन जिनका निर्माण एक प्रकार के पदार्थ टाइरोसिन से होता है, और दूसरे फेओमिलेनिन इसका रंग पीले से लेकर लाल होता है।

मनुष्य में इनके अतिरिक्त दो अन्य रंजक कण हीमोग्लोबिन (जिसके कारण रक्त का रंग लाल होता है) तथा कैरोटीन (जिसके कारण त्वचा का रंग पीला होता है) भी पाए जाते हैं, ये सभी रंजक मिलकर त्वचा को रंग प्रदान करते हैं परन्तु मनुष्य का काला या गोरा होना केवल मिलेनिन के ऊपर निर्भर करता है।

मिलेनिन का उत्पादन एक प्रकार की विशिष्ट कोशिकाओं 'मिलेनोसाइट' में होता है। मिलेनोसाइट में मिलेनिन एक विशेष संरचना मिलेनोसोम से संचित होता है। यद्यपि मिलेनोसाइट की संख्या काले तथा गोरे लोगों में समान होती है, परन्तु उसमें उपस्थित मिलेनोसोम का आकार तथा मिलेनिन की मात्रा भिन्न-भिन्न होती है।

काली त्वचा में मिलेनोसोम बड़े तथा मिलेनोसाइट कोशिकाएं सारी त्वचा में समान रूप में फैली होती हैं। इसके विपरीत गोरी त्वचा में मिलेनोसोम छोटे तथा मिलेनोसाइट कोशिकाएं छोटे-छोटे समूहों में जमा रहती हैं।

त्वचा में मिलेनिन की मात्रा उसको मिलने वाली प्रकाश की मात्रा पर निर्भर करती है।

वैसे गर्म प्रदेशों के लोगों की त्वचा में मिलेनिन अधिक होने से त्वचा काली होती है, यह काला रंग त्वचा को धूप में झुलसने से बचाता है, सफेद त्वचा धूप में झुलस जाती है। ❖

कुएं में गिरा चाँद

रोचक कहानी :

कमल सोगानी

चाचा चुन्नीलाल तपाकी दिमाग के आदमी थे। हर दो-चार दिन छोड़कर उनके दिमाग में जब गर्मी चढ़ जाया करती तो वे तरह-तरह की हरकतें किया करते।

एक रात यानि पूनम की चाँदनी रात में कोई सुन्दर सपना देखकर चाचा की नींद उचट गई। वे चारपाई पर बैठकर सपने के बारे में सोचने लगे। हाँ, सपना भी बड़ा अजीब था। जंगल के रास्ते वाले कुएँ में कोई परी पानी पर नृत्य कर रही है। अब उनसे रहा न गया, परी को देखने के लिए उतावले हो उठे और उनके तपाकी दिमाग पर फिर से गर्मी हावी हो गई। वे दौड़े-दौड़े कुएँ के पास पहुँचे, झांककर देखा तो बड़ा अचरज हुआ। परी के स्थान पर पूनम का चाँद मुस्कुरा रहा था।

दरअसल कुएँ में पूनम के चाँद के प्रतिबिम्ब को देखकर वे सोचने लगे। शायद परी आसमान से आते वक्त चाँद पर बैठकर आई होगी। हाँ, वो तो पंख लगाकर उड़ गई और बेचारे चाँद को इस कुएँ में धकेल गई।

अब चाँद को कुएँ में गिरा देखकर उन्हें चिन्ता हुई। उन्होंने मन में विचार किया– 'इसे तुरन्त निकाल लेना चाहिए।' बस, यही सोचकर वे तुरन्त घर पहुँचे और एक लम्बी मजबूत रस्सी लेकर कुएँ के पास जा पहुँचे।

अब उन्होंने पूरी ताकत से रस्सी को कुएँ में फेंका, रस्सी का अन्तिम सिरा उनके हाथ में था। रस्सी पानी में भीगकर डूबने लगी तो उन्होंने एक तेज आवाज देकर कहा, "चाँदमल जी। जरा इस रस्सी को मजबूती से पकड़ लो। इसी में तुम्हारी भलाई और जिन्दगी है। हाँ, मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी चमक-दमक सदा कायम रहे।"

संयोग से रस्सी का सिरा एक भारी भरकम चट्टान में फंस गया। पूरी ताकत उन्होंने लगा दी, लेकिन रस्सी अपनी जगह से तनिक न हिली। चाचा समझे कि चाँद बहुत भारी है। इसलिए मुझसे नहीं खिंच रहा है, बस यही सोचकर उन्होंने एक बार फिर से पूरी ताकत लगाकर खींचने का प्रयास किया। इस संघर्ज़ में रस्सी चट्टान से निकल गई। चाचा जो पूरी ताकत से उसको खींच रहे थे, पीछे की ओर धड़ाम से गिर पड़े। उन्हें कई जगह चोट लगी, लेकिन जब आकाश पर नजर गई तो उनकी खुशी की कोई सीमा न रही। पूनम का चाँद अपनी पूरी चमक-दमक के साथ आसमान में मुस्कुरा रहा था। वह स्वयं को धन्यवाद देते हुए बोले– "भगवान का शुक्र है मेरी मेहनत व्यर्थ न गई और दुनिया के लिए काम आ गई। मैं जमीन पर तो गिरा, पर चाँद को आकाश पर पहुँचाकर ही मैंने दम लिया ...। ❖

मृगमरीचिका क्या है?

जानकारी : पुष्पेश कुमार

बच्चों, आप सभी मृगमरीचिका के नाम से अवश्य परिचित होंगे। लेकिन क्या आप जानते हैं कि मृगमरीचिका क्या है? और हमें क्यों दिखायी पड़ती है? इसका नाम मृगमरीचिका क्यों पड़ा? गर्मी के मौसम में आप अपने गाँव या शहर की पक्की सड़क पर देखा होगा कि आपसे कुछ दूर पानी से भरा एक तालाब है। आप जैसे-जैसे उस तालाब की ओर बढ़ते हैं, वैसे-वैसे वह तालाब भी आपसे दूर होता जा रहा है। यह मृगमरीचिका (मृगतृष्णा) है। पानी से भरा तालाब हमें इसलिए दिखायी पड़ता है कि प्रकाश जो आमतौर पर सीधा आता है, उस समय सीधा न आकर, एक दर्पण से परिवर्तित होकर आता है। आपको यह जानकर आश्चर्य हो रहा होगा कि अब यह दर्पण कहाँ से आ गया? दरअसल, यह काँच का दर्पण नहीं होता बल्कि यह हवा का दर्पण होता है। होता यह है कि सड़क से लगी हवा की परत जब एक खास ताप पर गर्म होती है और उसके ठीक ऊपर वाली परत एकदम ठंडी होती है तो यह दर्पण बनता है। आकाश से आने वाला प्रकाश जब नीचे आता है तो वह इस ठंडी परत से गुजरता हुआ, गर्म परत से टकराकर वापस मुड़ता है और तब हमारी आँखों तक पहुँचता है। इस प्रकार आकाश ही परिवर्तित होकर दिखायी पड़ता है, जो कि एकदम पानी से भरा तालाब लगता है।

मृगमरीचिका कई प्रकार की होती है। जब हवा का दर्पण उल्टी तरह से बनता है, यानी ठंडी परत नीचे और गर्म परत ऊपर तो यह काम भी उल्टी तरह से करता है। ऐसी स्थिति में आप अपने से मीलों दूर मकान या पानी के जहाज भी देख सकते हैं। वास्तव में इसका नाम मृग के साथ इसीलिए जोड़ दिया गया है कि रेगिस्तान में दौड़ता प्यासा मृग पानी की खोज में परिवर्तित आकाश को ही पानी समझकर उसके पीछे दौड़ता है लेकिन यह 'पानी' आगे ही आगे बढ़ता जाता है। इस प्रकार मृग की प्यास कभी बुझ नहीं पाती है। यही कारण है कि इसे मृगमरीचिका कहा जाता है। ❖

पर्यावरण बचाओ

बाल कविता : हरजीत निषाद

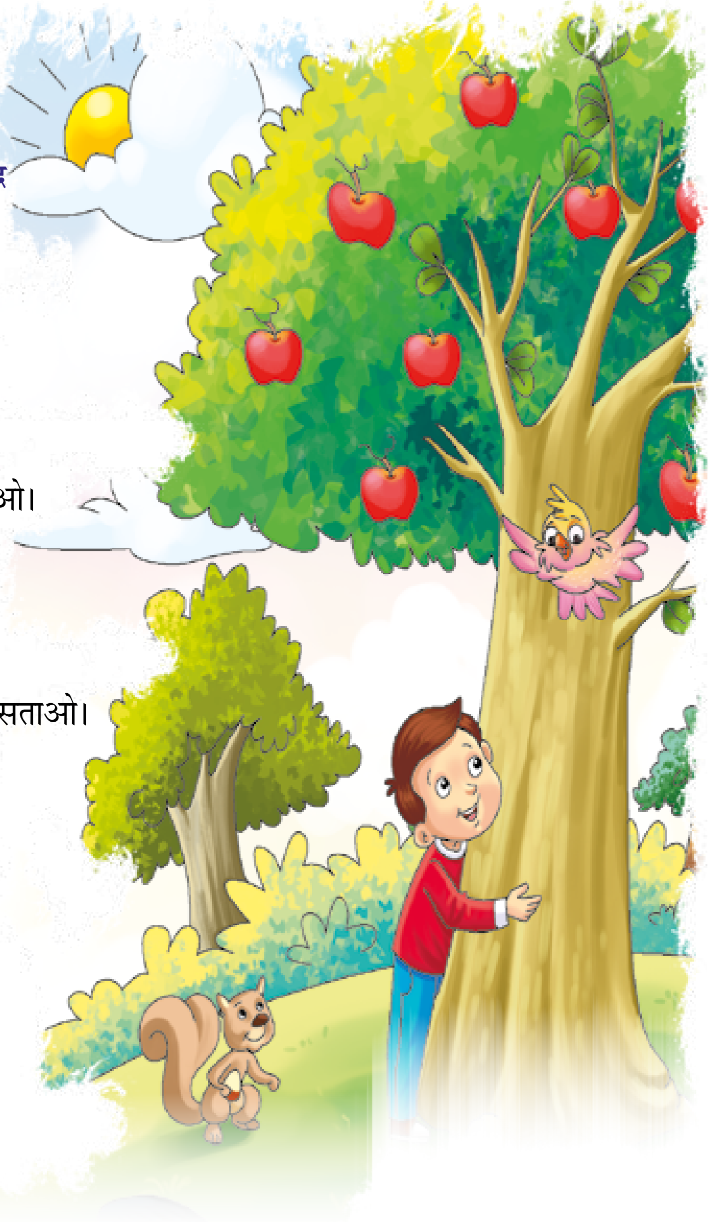

खतरे में हैं वन्यजीव सब,
मिलकर इन्हें बचाओ,
पर्यावरण बचाओ, पर्यावरण बचाओ।

पेड़ न काटो पेड़ लगाओ।
वन हैं कीमती इन्हें बचाओ।
वन देते हैं ऑक्सीजन, इनमें न आग लगाओ।
पर्यावरण बचाओ, पर्यावरण बचाओ।

पक्षी पेड़ों पर हैं रहते।
मीठे फल ये खाते रहते।
घर न इनके कभी उजाड़ो। कभी न इन्हें सताओ।
पर्यावरण बचाओ, पर्यावरण बचाओ।

जंगल अपने आप उगेंगे।
लता पेड़ फल फूल बढ़ेंगे।
कोयल कूके मैना गाये, हरियाली फैलाओ।
पर्यावरण बचाओ, पर्यावरण बचाओ।

समय पे वर्षा समय पे धूप।
कुदरत का निखरेगा रूप।
धानी चादर ओढ़े धरती देख-देख हर्षाओ।
पर्यावरण बचाओ, पर्यावरण बचाओ।

पेड़

बाल कविता : हरप्रसाद 'रोशन'

चलो पेड़ के जैसा, जीवन हम अपनाएं।
परोपकारी बनकर, सबके काम आएं।

पेड़ सदा ही देता, फल, फूल और जल।
औरों की खातिर ये, जीता है हर पल।

प्रदूषण मिटाकर, साफ हवा करता।
नई चेतना सबके, प्राणों में भरता।

धरती का ये बेटा, अद्भुत इसके गुण।
अपने अन्दर हम भी, भर लें अच्छे गुण।

पर्यावरण दिवस पर विशेष आलेख

पर्यावरण को सभी बचाएं

सुमेश निषाद

5 जून को पर्यावरण दिवस मनाकर हम सभी पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संकल्प लेते हैं और प्रकृति ने हमें जो अनमोल उपहार दिया है इसके प्रति परमात्मा का आभार व्यक्त करते हैं। सोचने की बात है कि अगर प्रकृति हमारा पोषण करती है तो क्या हम इसके प्रति हृदय से कृतज्ञ होते हैं या इसका शोषण करके पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं।

हम अपने चारों ओर नजर डालें तो आज पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण अनेकों समस्याएं पैदा हो गई हैं। पहाड़ों पर हरियाली खत्म होती जा रही है। 'पेड़ लगाएं, जीवन बचाएं' तथा 'पेड़ लगाओ, पृथ्वी बचाओ' का नारा लगाने के साथ-साथ हमें स्वयं पेड़ लगाना भी होगा तभी धरती की हरियाली कायम रह पाएगी और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन का जहरीला प्रभाव कम किया जा सकेगा। आज हवा भी इतनी प्रदूषित हो गई है कि ठीक से सांस लेना तक मुश्किल होता जा रहा है। वायुमंडल में हानिकारक गैसें और अशुद्ध कण, उद्योग व वाहनों से निकलने वाली गैसें आदि का मानव के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इससे छुटकारा पाने के लिए वृक्षारोपण करना तथा अन्य आवश्यक रोकथाम के प्रयास करना ही उचित उपाय है।

यातायात के साधनों तथा जनसंख्या में इतनी ज्यादा वृद्धि होने के कारण शोर-शराबा बहुत बढ़ गया है। इससे इन्सान के सुनने की क्षमता कम होती जा रही है। साथ ही इससे मन में भी अनावश्यक तनाव की स्थिति पैदा होती है।

ऐसा देखा गया है कि प्रदूषण फैलाने का कार्य इन्सानों द्वारा ही ज्यादा किया जाता है।

पशु-पक्षियों की जीवनशैली प्रकृति के साथ ढली हुई होती है लेकिन मानव है कि वह प्रकृति के नियंत्रण को स्वीकार करने को तैयार ही नहीं होता।

आज जल प्रदूषण भी एक वैश्विक समस्या बन गई है। नदियों, नालों, झीलों यहाँ तक कि समुद्र का जल भी प्लास्टिक तथा रासायनिक अपशिष्टों के कारण दूषित हो रहा है। कारखानों से निकली रासायनिक गंदगी जब नदियों व अन्य जल स्रोतों में मिल जाती है तो उस जल का सेवन करना बीमारी को आमंत्रित करने जैसा होता है। अगर दूषित जल का समुचित उपचार करने के बाद ही उसे नदी-नालों में जाने दिया जाए तभी जल प्रदूषण से छुटकारा पाना संभव होगा।

26 फरवरी 2023 को सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा देश भर में 1100 से अधिक स्थानों के 730 शहरों, 27 राज्यों की, 15 प्रमुख नदियां, 457 नदी तटों, 120 झीलों, 307 तालाबों, 43 समुद्री तटों, 26 जल संरक्षण स्थलों तथा अनेक कुओं, नालों,बांधों व जलाशयों आदि की सफाई की गई। जल प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में यह एक सराहनीय कदम है। इसी तरह के अन्य प्रयास लगातार किए जाने चाहिए ताकि धरती का पर्यावरण स्वच्छ और सुन्दर बने।

पर्यावरण संरक्षण का कार्य हम सबका सांझा कार्य है। ❖

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : प्रियंका चोटिया

- ❖ आपका भविष्य उससे बनता है जो आप आज करते हैं, उससे नहीं जो आप कल करेंगे।
- ❖ श्रेष्ठता का अर्थ सफल होने से नहीं, बल्कि सफलता को आदत बना लेने से है।
- ❖ जैसे हीरा रोशनी के सामने चमक उठता है। ठीक वैसे ही मनुष्य पुस्तकों के सम्पर्क में आकर ज्ञानपुंज बन सकता है।
- ❖ सफलता साहस की संतान है।
- ❖ शिक्षा की जड़ें भले ही कड़वी हों, परन्तु उसके फल मीठे ही होंगे।
- ❖ न तो संसार में तुम्हारा कोई मित्र है, न ही कोई शत्रु। तुम्हारा अपना व्यवहार ही शत्रु या मित्र बनाने का उत्तरदायी है।
- ❖ दो बातों को प्रकट कर देना चाहिये, अपने अवगुण और दूसरों के गुण।
- ❖ ज्ञान में पूंजी लगाने से फलती-फूलती है।
- ❖ एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है इसलिए उसका हर हालात में सम्मान करना चाहिए।
- ❖ कोई भी बात कहने से पहले हमें एक बार शुद्ध मन से अवश्य सोचना चाहिए कि हम जो बात अपने मुख से निकाल रहे हैं उसका परिणाम अच्छा रहेगा या बुरा।
- ❖ जो इन्सान, अपनी जरूरतों (इच्छाएं) सीमित कर सादगी जैसा आचरण व सरल स्वभाव के साथ जीवन जीता है वह सदा सुखी रहता है।
- ❖ कठिन परिस्थितियों में समझदार आदमी रास्ता खोजता है और कमजोर आदमी बहाना।
- ❖ जीवन को सही दिशा देने के लिए सही ज्ञान होना जरूरी है।
- ❖ सफलता का आधार है सकारात्मक सोच और निरंतर प्रयास।

फलों की दावत

बाल कहानी : फारूख हुसैन

भानु भालू का बहुत बड़ा फलों का बाग था। जिसमें उसने आम, अंगूर, जामुन, लीची, अंजीर, आड़ू आदि के पेड़ लगाए हुए थे। भानु बहुत ही झगड़ालू किस्म का व बहुत कंजूस था, जिसके कारण वह किसी को भी फल खाने के लिए नहीं देता था। और यही नहीं वह अपने बगीचे के पास किसी भी जानवर को फटकने भी नहीं देता था और अगर बच्चे गिरा हुआ भी कोई फल उठा ले तो वह उसकी पिटाई कर देता था जिससे बगीचे के आसपास भी आने से बच्चे डरते थे। बाग को कोई नुकसान न होने पाये इसके लिये वह बाग में ही एक झोपड़ी डालकर रहता था। भानु का झगड़ालू स्वभाव होने के कारण बच्चे तो बच्चे बड़े भी उससे बात करना पसन्द नहीं करते थे।

एक दिन सोनू बकरा, रोमी खरगोश, बंटी बंदर और गौरी हिरण विद्यालय से अपने घर जा रहे थे। जैसे ही वह भानु चाचा के बाग के पास पहुँचे, बाग में फलों से लदे पेड़ों को देखकर सभी के मुँह में पानी आ गया। सामने आम, जामुन, अनार, लीची के ढेर सारे फल पेड़ों पर लगे हुए थे।

'काश हमें भी काले-काले जामुन खाने को मिल जाते।' सामने पेड़ पर पके-पके काले जामुन देखकर गौरी वहीं रूकते हुए बोली।

'ऐसा सोचो भी मत वरना अगर भानु चाचा को पता चल गया तो हमें बहुत डांटेगे और हो सकता है पिटाई भी कर दे।' सोनू गौरी से बोला।

अभी सोनू अपनी बात समाप्त ही कर पाया था कि सामने से भानु चाचा वहाँ आ गये।

'भागो यहाँ से शैतानों', मेरे बाग के पास खड़े होकर क्या कर रहे हो? भानु बच्चों को डांटते हुए बोला।

भानु चाचा की बात सुनकर सभी बच्चे सहमकर अपने घर की ओर चल दिए।

'हमें कुछ करना पड़ेगा जिससे कि भानु चाचा हमको खुद बुलाकर फल खिलाए।' बंटी कुछ सोचते हुए बोला।

'यह तो कभी हो ही नहीं सकता।' रोमी बोला।

यही तो हमें सोचना है कि क्या किया जाए जिससे कि भानु चाचा हम लोगों

को फलों को खाने की दावत दे। बंटी ने सभी से कहा।

'एक उपाय है।' बंटी ने सभी की ओर देखते हुए कहा।

बंटी की बात सुनकर सभी उसकी ओर देखने लगे।

'मैं सोच रहा हूँ क्यों न हम फल मंडी से सड़े-गले फल लाकर दो-चार दिन भानु चाचा के बगीचे में डाल दें और उनसे कहें कि आपके पेड़ों में कोई बीमारी लग गई है। फल खराब हो रहे हैं, जल्दी ही इसे खाकर खत्म कर दो। वह अकेले तो इतने सारे फल खा नहीं सकते और इतनी जल्दी उनके फल बिकेंगे भी नहीं जिससे वहाँ हम लोगों को जरूर फल खिलाएंगे।' बंटी सभी को समझाते हुए बोला।

बंटी की बात सभी को सही लगी और वे खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल दिए। जिसके बाद शाम को वे सभी पड़ोस की ही फल मंडी से जाकर सड़े-गले फल उठा लाये और भानु की नजर बचाकर रात को उसके बगीचे में बिखेरने के लिए पहुँच गए।

जब वे बाग में पहुँचे तो चारों ओर अंधेरा था। वे लोग थैले से सड़े फल निकालकर पेड़ों के नीचे बिखरने लगे। उनको डर भी लग रहा था कि अगर भानु चाचा को पता चल गया तो वे उनकी पिटाई तो करेंगे ही वही घर में और स्कूल में उनकी शिकायत भी कर देंगे।

वे लोग फल बिखेर ही रहे थे कि तभी उनको कुछ आवाजें सुनाई दीं। आवाजें भानु चाचा की झोपड़ी से आ रही थी ऐसा लग रहा था कि कोई भानु चाचा से बात कर रहा है वहीं बीच-बीच में भानु चाचा की गुस्से भरी आवाज साफ सुनाई दे रही थी तभी अचानक भानु चाचा की दर्द भरी चीख उनको सुनाई दी। आवाज सुनकर वे चौक गए उनको समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर भानु चाचा क्यों चीख रहे हैं?

'हमें झोपड़ी में पहुँचकर देखना चाहिए कि आखिर भानु चाचा को क्या हुआ है?' सोनू बोला।

'नहीं हम नहीं जाएंगे अगर उन्होंने हमें यहाँ देख लिया तो मुसीबत हो जाएगी।' गौरी डरते हुए बोली।

गौरी की बात सुनकर सभी सोच में पड़ गए लेकिन उधर भानु चाचा की दर्द भरी चीखें बढ़ती ही जा रही थीं। आखिर उन्होंने भानु चाचा की झोपड़ी में जाकर देखने का निश्चय किया। वे चुपके भानु चाचा की झोपड़ी में पहुँच गए। उन्होंने झोपड़ी में झांककर देखा झोपड़ी में लालटेन जल रही थी। इसलिए अन्दर काफी रोशनी थी। अन्दर भानु चाचा एक ओर रस्सी से बधे हुए पड़े थे और दूसरी ओर ब्लैकी लकड़बग्घा और मोंटी गीदड खड़े हुए थे जिसमें से ब्लैकी अपने हाथों में कुछ कागज लिये हुए था और मोंटी हाथ में चाकू लिये हुए भानु चाचा को धमका रहा था और जबरदस्ती उन कागजों पर हस्ताक्षर करने को बोल रहा था और भानु चाचा के मना करने पर उनकी पिटाई कर रहा था जिसकी वजह से वह चीख रहे थे। आसपास आबादी न होने से उनकी चीख कोई नहीं सुन रहा था। यह सब देखकर सभी बच्चे घबरा गये थे। उनको समझ नहीं आ रहा था कि वे कैसे भानु चाचा को बचाये।

'हमें कैसे भी भानु चाचा को इन गुडों से बचाना पड़ेगा।' सोनू ने बंटी, रोमी और गौरी से कहा।

'लेकिन हम उनको कैसे बचा पायेंगे ये बदमाश तो बहुत ही खतरनाक हैं।' गौरी बोली।

'लेकिन कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा वरना यह बदमाश भानु चाचा के साथ कुछ भी कर सकते हैं।' बंटी गंभीर होकर बोला।

'गौरी तुम घर जाकर पापा को पूरी बात बताओ और उनसे पुलिस को बुलाकर लाने के लिए बोलो' बंटी गौरी को समझाते हुए बोला।

'तब तक हम इनको मजा चखाते हैं।' कुछ सोचते हुए बंटी बोला और फिर अपनी योजना सोनू और रोमी को बताई। बंटी और रोमी ने पड़ोस में ही पड़ी हुई भानु चाचा की लाठी उठा ली और झोपड़ी के दरवाजे पर खड़े हो गये। सोनू झोपड़ी के दरवाजे पर खड़ा होकर पुलिस-पुलिस शोर मचाने लगा। सोनू की आवाज सुनकर दोनों बदमाश हड़बड़ा गये और वहाँ से भागे लेकिन झोपड़ी से बाहर निकलते ही बंटी और रोमी उनकी लाठियों से पिटाई करने लगे। लाठी पड़ते ही दोनों बदमाश वहीं गिर गये। लेकिन दोनों फिर भी उनकी पिटाई करते रहे। सोनू ने फौरन झोपड़ी में जाकर भानु चाचा की रस्सी खोल दी। तभी गौरी के पापा बंटू हिरण इंस्पेक्टर दहाड़ सिंह

और उनके सिपाहियों को लेकर आ गये। दहाड़ सिंह ने तुरन्त मोंटी और ब्लैकी को गिरफ्तार कर लिया। दहाड़ सिंह ने बताया कि इन दोनों बदमाशों की हमें काफी समय से तलाश थी ये लोग डरा-धमकाकर लोगों की जमीनें अपने नाम करवाकर उसको बेच देते थे। इनकी काफी शिकायत हमको मिली थी लेकिन तुम बच्चों की वजह से आज यह पकड़े गये।

उधर यह सब देखकर भानु चाचा की आँखों में आंसू आ गये। उन्होंने बताया कि किस तरह से यह दोनों बदमाश उसको डरा-धमकाकर बाग को अपने नाम करवाकर बेचना चाहते थे लेकिन तुम लोगों की वजह से मेरा बाग बच गया।

'लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आया कि तुम लोग रात में यहाँ क्या कर रहे थे?' भानु चाचा ने बच्चों से पूछा।

भानु चाचा के पूछने पर बंटी ने पूरी बात चाचा को बता दी। यह सुनकर चाचा शर्मिन्दा हो गये।

'अच्छा, हाँ कल तुम लोगों की मेरे बाग में फलों की दावत है। तुम सभी बच्चों को आना है।' भानु चाचा सभी बच्चों से बोले।

चाचा की बात सुनकर सभी बहुत खुश हुए। अगले दिन सोनू, बंटी और गौरी ने बाग में पहुँचकर फलों की दावत उड़ायी। इस घटना के बाद भानु चाचा बिल्कुल बदल गये। अब वे किसी पर गुस्सा नहीं होते थे बल्कि अब वह खुद सभी जानवरों को बुलाकर फल खाने के लिए देते थे और बच्चे भी बाग की साफ-सफाई व पेड़ों की देख-रेख करने में उनकी सहायता करते थे। उनके इस बदलाव से सभी खुश थे। ❖

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

– घमंडीलाल अग्रवाल

प्रश्न : रेगिस्तान में दिन के समय गर्मी और रात्रि को ठंड क्यों होती है?

उत्तर : रेगिस्तान में रेत की अधिकता रहती है। रेत ऊष्मा का अच्छा अवशोषक है। अत: दिन के समय सूर्य की ऊष्मा को अवशोषित करके रेगिस्तान गर्म हो जाते हैं और वहाँ गर्मी रहती है। रेगिस्तान विकिरण द्वारा अपनी ऊष्मा को निकालकर रात्रि में ठंडे हो जाते हैं जिससे रात्रि को वहाँ ठंड रहती है।

प्रश्न : खिड़की के शीशे पर गोली मारने से वह एक छेद बनाकर आर-पार निकल जाती है लेकिन पत्थर मारने पर कांच क्यों टूट जाता है?

उत्तर : खिड़की के शीशे का टूटना अथवा उसमें छेद का बनना फेंकी गयी वस्तु के आकार एवं वेग पर निर्भर करता है। जब गोली अधिक वेग से शीशे की ओर जाती है तो प्रभावित स्थान भी गतिशील हो जाता है (समीपवर्ती स्थान विराम अवस्था में ही रहता है) इससे वह छेद बनाती हुई निकल जाती है। दूसरी ओर, कम वेग से पत्थर फेंकने पर पूरे कांच में कण गतिशील हो जाने के कारण खिड़की का कांच चूर-चूर हो जाता है।

प्रश्न : तेज आँधी अथवा तूफान में छप्पर या टिन क्यों उड़ जाते हैं?

उत्तर : बरनौली के सिद्धांत के अनुसार जब तीव्र वेग से आने वाली आँधी अथवा तूफान छत के ऊपर से गुजरते हैं तो छत पर हवा का दाब कम हो जाता है। दूसरी ओर, कमरे के भीतर हवा का दाब अधिक हो जाता है जिससे कमरे का छप्पर या टिन उड़ जाते हैं।

प्रश्न : समुद्र के तल से ऊपर की ओर लौटता हुआ गोताखोर धीमी गति से ही ऊपर की ओर क्यों आता है?

उत्तर : जब कोई वस्तु पानी के सम्पर्क में आती है तो पानी उस पर अपना दबाव डालता है जिसके कारण वह प्रभावित होती है। ठीक यही बात गोताखोरों के सम्बन्ध में भी लागू होती है। गोताखोर इसलिए धीमीगति से ऊपर की ओर आता है ताकि उसके शरीर पर पानी के घटते हुए दबाव का कम से कम प्रभाव पड़ सके।

जल का सदुपयोग

कविता : गफूर 'स्नेही'

जल का सदुपयोग करो,
जरा न दुरुपयोग करो।

जल से सबकी बुझती प्यास,
जल है अब कम अपने पास।

सूखे हैं झील और तालाब,
खपत का भी बढ़ा दबाब।

जहाँ रूकेगा गंदा जल,
जन्मेंगे मच्छर हर पल।

जब तक न हो जाये बरसात,
जल बचत की ही हो बात।

आपस में सहकार हो,
तब ही गर्मी पार हो।

पानी को सहेजें

बाल कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

पानी की है कमी इस कदर,
सूख गई हैं झीलें।
दरक गई उपजाऊ भूमि,
ताल रहे ना गीले।।

नदियों, कुओं, तालाबों से,
रूठ गया है पानी।
कहते हैं कुछ समझदार,
ये है अपनी नादानी।।

पर्यावरण बिगाड़ा हमने,
हरे पेड़ काटे हैं।
पंछी का दाना छीना है,
दु:ख सबको बांटे हैं।।

अभी वक्त है वर्षा का,
जल को चलो सहेजें।
खेतों में लहराएं फसलें,
इतना ही पानी भेजें।।

कला पारखी कौन?

प्रेरक-प्रसंग : विभा वर्मा

राजा कृष्णदेव राय को संगीत से बड़ा प्रेम था। एक बार उन्होंने बनारस से किसी प्रसिद्ध गवैये को बुलाया। रात गये तक दरबार में उससे राग सुनते रहे। दरबारी ऊब रहे थे, ऊंघ रहे थे फिर भी राजा को प्रसन्न करने के लिए वाह! वाह! कह रहे थे। अचानक राजा की निगाह तेनालीराम पर पड़ी। वह एक कोने में चुपचाप बैठा था, वह झपकी ले रहा था। देखते ही राजा नाराज हो गये। गायन समाप्त हो गया। राजा ने तेनालीराम को याद किया। वह सोया हुआ था। सिपाही उसे पकड़कर राजा के नजदीक लाये।

राजा बोले— तेनालीराम, तुमने अतिथि गवैये के साथ हमारा भी अपमान किया है। आदेश के विपरीत तुम दरबारी महफिल में सारे समय सोते रहे। तुम्हें कठोर दंड मिलना चाहिए। तुम हमारा राज्य छोड़कर तुरन्त चले जाओ।

दरबारी खुश हो गये। तेनालीराम सकपका गया। फिर बोला— महाराज, आपका आदेश सिर-माथे पर। माँ बचपन में लोरियां सुनाती थी। उनको सुनकर सुध-बुध खो बैठता था। आज का गायन सुनकर मुझे वैसा ही लगा जैसे मैं मीठी लोरियां सुन रहा हूँ। मुझे कुछ भी होश न रहा।

राजा ने गवैये की ओर देखा। गवैया मुस्कुराकर बोला— यही सबसे बड़ा कला पारखी है महाराज। इसे क्षमा किया जाना चाहिए। राजा ने तेनालीराम को क्षमा कर दिया साथ में ईनाम भी दिया।

—वास्तविकता यही है कि जो लोग दिमाग से जाग्रत रहते हैं, वे निर्भीक भी रहते हैं तथा अपने ऊपर आये संकट का निवारण भी वे तुरन्त कर देते हैं। ❖

अजीबों गरीब जानकारियां
जानवरों के बारे में

प्रस्तुति : विभा वर्मा

- हाथी की सूंड में करीब चालीस हजार मांसपेशियां होती हैं। लेकिन हड्डी एक भी नहीं। यह अपनी सूंड में करीब 8 लीटर तक पानी भरकर ले जा सकता है। यह आदमी की गंध तीन हजार फीट की दूरी से सूंघ सकता है।
- जिराफ की लात खाकर बड़े से बड़ा पशु शेर तक मर सकता है। यह पिछली टांगों को बड़ी गति से पिस्टन की तरह चलाता है।
- बिल्ली की रीढ़ की हड्डी बेहद लचीली होती है। इसलिए यह बेहद तंग जगह से भी निकल जाती है। इसके पैरों में गद्दियां होती हैं। यही कारण है कि बिना आवाज के ऊपर से नीचे कूद सकती है।
- जेब्रा के शरीर पर पाई जाने वाली धारियां काफी उजली, चौड़ी व आसानी से दिखाई पड़ जाने वाली होती हैं। पर समतल मैदान पर इन्हीं धारियों के कारण दूर से देखने पर ये साफ नज़र नहीं आते। चूंकि सबके बदन पर अलग-अलग धारियां होती हैं ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार मनुष्य के फिंगर प्रिंट एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।
- घोड़ा चार साल में वयस्क हो जाता है। यह खड़े-खड़े ही सो जाता है। जैसे ही सोता है इसके घुटने की हड्डियां इंटरलॉकिंग हो जाती है। यानि मुड़ने वाली हड्डियों में ताला लग जाता है।
- गिलहरी के दाँत ऐसे होते हैं कि ये थकने अथवा टूटने का नाम ही नहीं लेते। दाँतों की लम्बाई सामान्य बनाने के लिए उन्हें कुतरते रहना पड़ता है।
- कस्तूरी मृग के शरीर में पेट की त्वचा के नीचे नाभि के पास एक खास ग्रंथि में कस्तूरी रहती है। एक बार में 15 से 25 ग्राम कस्तूरी निकलती है।
- वानरों में चिम्पैंजी सबसे बुद्धिमान होता है। मनुष्य की भांति चिम्पैंजी के भी दुम नहीं होती।
- ऊँट दौड़ते समय अपनी एक तरफ की दोनों टांगें एक साथ चलाता है जिससे सवार आगे-पीछे हिलता है। इसका दूध बहुत गुणकारी होता है। इसका दूध बहुत जल्दी फट जाता है इसलिए इसे तुरन्त पीना पड़ता है। ❖

चोरी का दंड

पौराणिक कथा : दीपांशु जैन

गंगा के किनारे दो आश्रम थे। दोनों ही आश्रमों में विद्यार्थी दूर-दूर से पढ़ने आते थे। एक के स्वामी थे शंख और दूसरे के लिखित। दोनों भाई ही थे। शंख बड़े थे और लिखित छोटे। दोनों ही भाई धर्माचार्यो के रूप में भी बहुत प्रसिद्ध थे।

एक दिन की बात है लिखित अपने बड़े भाई शंख के आश्रम पहुँचे। वह कहीं गये हुए थे। कुछ देर लिखित उनकी कुटिया के द्वार पर ही उनकी प्रतीक्षा करते रहे, फिर बगीचे की तरफ निकल गये। टहलते-टहलते उनकी नजर पके हुए सुंदर-सुंदर फलों पर पड़ी। उनका मन मचल गया। उन्होंने हाथ बढ़ाकर कुछ फल तोड़ लिये।

वह उन्हें खाने ही वाले थे कि शंख आ गये। यह देखकर उन्होंने छोटे भाई से पूछा, ''क्या भूख ज्यादा लगी है? ये फल तुम्हें कहाँ से मिले?''

लिखित ने आगे बढ़कर पहले उनके पांव छुए फिर बोले, ''ये फल आपके आश्रम के ही हैं... भूख तो नहीं थी पर इन्हें देखकर जी ललचा गया।''

इतना सुनते ही शंख गम्भीर हो गये। बोले, ''भाई, यह तो चोरी हुई। मुझसे बिना पूछे मेरे आश्रम के फलों को तोड़ने का साहस तुम्हें कैसे हुआ?''

लिखित गर्दन झुकाये मौन खड़े थे।

शंख बोले, ''तुम अभी राजा के पास जाओ और कहो कि मैंने चोरी की है, मैं चोर हूँ, मुझे दंड दीजिए।'' यह कहकर वह कुटिया की ओर चल दिये। लिखित वहीं खड़े के खड़े रह गये। उनका मन पश्चाताप से भर उठा था।

लिखित राजा के पास पहुँचे। दरबार लगा हुआ था। महाराज किसी संगीन मामले पर फैसला सुना रहे थे। द्वारपाल ने आचार्य लिखित के आने का समाचार महाराज तक पहुँचाया। यह समाचार पाते ही महाराज ने अपने मंत्रियों सहित पैदल चलकर उनकी अगवानी की और पूछा, ''आदरणीय, कैसे आना हुआ? कहिए क्या आज्ञा है?''

उत्तर में लिखित ने सारी घटना बयान कर डाली और दंड के लिए महाराज से प्रार्थना करते हुए बोले, ''महाराज, देरी न करें क्योंकि मैंने चोरी जैसा काम किया है...''

यह सुनकर सभी दंग रह गये। महाराज ने उन्हें बहुत समझाया कि यह कोई ऐसा अपराध नहीं है, जिस पर आप इतने गम्भीर हो गये हैं। लेकिन लिखित थे कि अपनी बात पर अड़े ही रहे।

इस पर राजा ने अपने सहयोगियों से सलाह-मशविरा के लिए थोड़ा समय मांगा। लेकिन लिखित बोले, ''राजन! आपके निर्णय में देर हुई तो न्याय नहीं हो सकेगा। हो सकता है कि आपके मंत्रियों को मुझ पर दया आ जाए... या वृद्धजन कहें कि यह ऐसा अपराध नहीं है, जिस पर दंड देना जरूरी हो।''

लिखित का यह उत्तर सुनकर सारी सभा स्तब्ध रह गयी... चूंकि फल उनके हाथों ने तोड़े थे। इसलिए राजा ने उनके हाथ कटवा दिये, परन्तु लिखित एकदम मौन थे। उनके चेहरे पर शिकन तक न थी।

अब लिखित अपने बड़े भैया के पास पहुँचे। उनके पैरों में गिर गये और बोले, ''मुझ दंड प्राप्त, पापी भाई को क्षमा करें।''

छोटे भाई का हाल देखकर बड़े भाई की आँखें भर आयीं। उन्होंने आगे बढ़कर लिखित को गले लगा लिया और बोले, ''भाई, मैंने क्रोध के वशीभूत होकर तुम्हें राजा के पास नहीं भेजा था, बल्कि तुमसे चोरी जैसा घृणित काम हो गया था, जिसका प्रायश्चित जरूरी था। राजदंड से वह हो गया, अब तुम्हारे चरित्र पर कोई दाग नहीं है... अगर ऐसा नहीं होता तो हमारे कुल पर चोरी का कलंक लग जाता।''

''अब आज्ञा दीजिए...''

''जाओ भाई, नदी पर जाओ और नहाकर अपने पूर्वजों को जलांजलि दो और उनकी नाराजगी दूर करो।''

यह सुनकर लिखित को बड़ा आश्चर्य हुआ। बिना हाथों के वह जलांजलि कैसे दे? फिर भी बड़े भाई की आज्ञा मानकर वह नदी तट पर पहुँचे। उन्होंने एक डुबकी लगायी। पर जैसे ही वह बाहर निकले तो उनकी आँखें हैरत से फैल गयीं। उनके दोनों हाथ सही-सलामत थे। वह नदी से बाहर निकले और दौड़े-दौड़े भाई के पास पहुँचे। वह भी यह देखकर बहुत खुश हुए और बोले, ''आदमी कितना ही तप करे लेकिन आचरण अगर शुद्ध नहीं हो तो सब बेकार है।''

यह सुनकर लिखित ने झुककर उनके पांव छू लिये। ❖

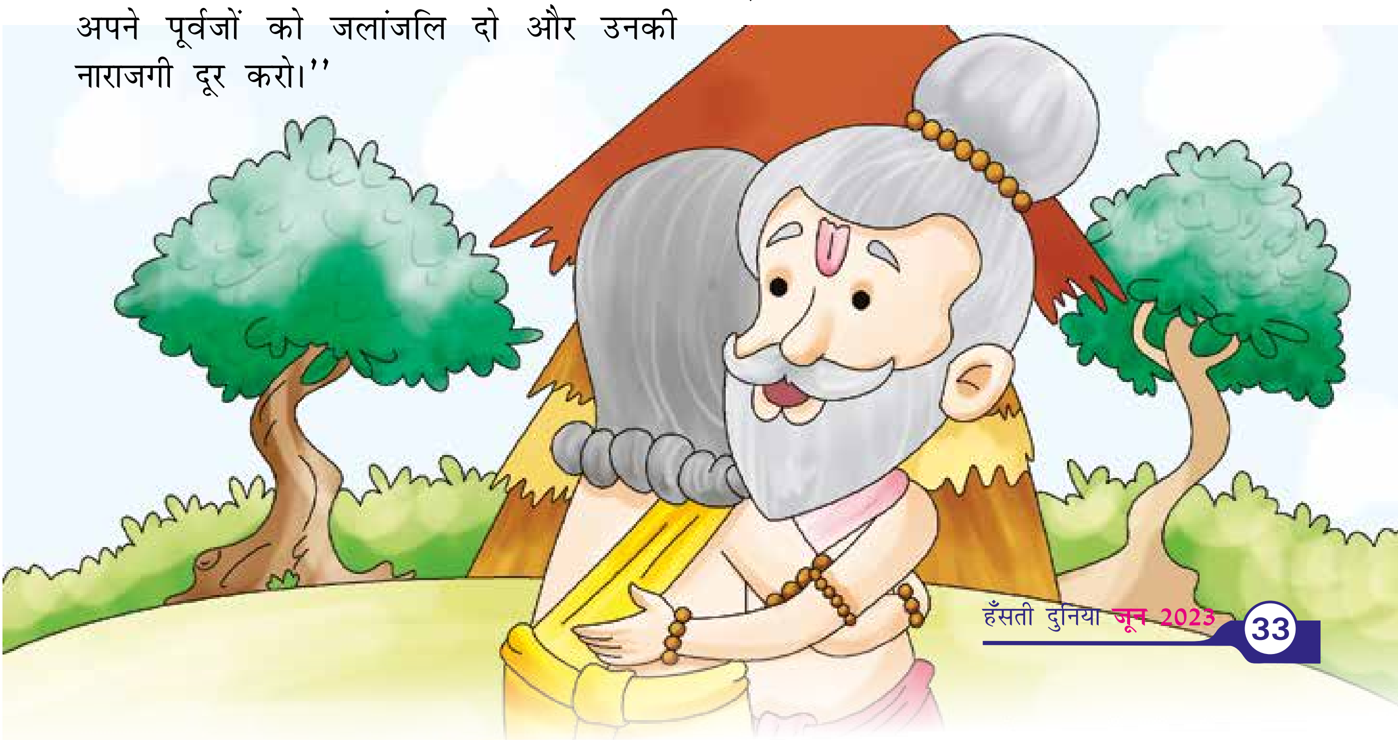

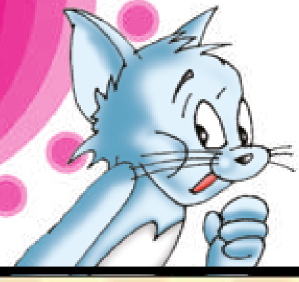

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : हेमराज

देखों किट्टी! मैं नया पेंसिल बॉक्स लाया हूँ।
बहुत अच्छा है, मुझे देदो ये। मैं कल वापस लौटा दूंगी।
किट्टी तुमने मेरा पेंसिल बाक्स तोड़ दिया। अब मैं तुम्हारी मम्मी से शिकायत करूंगा।
आंटी किट्टी ने मौली का खिलौना और मेरा पेंसिल बॉक्स तोड़ दिया।
अरे नहीं, मम्मा मैने जान बूझ कर नहीं तोड़ा मैं तो खेल रही थी और वो टूट गए।

किट्टी, यह बहुत गलत बात है। अब सॉरी बोलो इन दोनों से।
नहीं मॉम!
मुझे किट्टी को उसकी गलती का एहसास करवाना होगा।
मॉम, मुझे पैसे दे दो मुझे नया खिलौना लाना है।
किट्टी, अपनी पॉकेटमनी से ले आओ।
मॉम, देखो मेरा नया खिलौना।

मॉम मैं सोने जा रही हूँ।
अब मैं इसे छिपा देती हूँ और किट्टी को तब तक नहीं बताऊँगी जब तक उसकी गलती का एहसास नहीं हो जाता।
मॉम! मेरा खिलौना कहाँ है?
मुझें नहीं पता किट्टी, नहीं मिल रहा तो कोई बात नहीं तुम नया ले आओ।
पर मॉम वो मेरा फेवरेट खिलौना था।
सॉरी, मौली और चिंटू अब मुझे समझ आ गया अपनी फेवरेट चीज़ टूटने पर कैसा लगता है।

कभी न भूलो

❖ आपका संघर्ष जितना अधिक होगा, आपकी जीत उतनी ही शानदार होगी। – **थॉमस पेन**

❖ अपने सुख के लिए दूसरों को कष्ट देना महान पाप है। – **स्वामी दयानन्द**

❖ कल से सीखें, आज में जियें, कल के लिए उम्मीद रखें। – **अल्बर्ट आइंस्टीन**

❖ लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाना ही सफलता का एक अति महत्वपूर्ण सूत्र है। – **थियोडोर रूज़वेल्ट**

❖ उत्तम व्यक्ति शब्दों में सुस्त और चरित्र में चुस्त होता है। – **कन्फ्यूशियस**

❖ जो प्रयत्न करता है, भूलें उसी से होती हैं। – **गेटे**

❖ आप चाहे कितने ही प्रतिभाशाली क्यों न हो, अपने आपको प्रेरित नहीं कर पाते तो औसत परिणामों से ही संतुष्ट होना पड़ता है। – **एंड्र्यू कार्नेगी**

❖ मैं बहानों में विश्वास नहीं करता। मैं जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए कठिन परिश्रम को प्रमुख कारक मानता हूँ। – **जेम्स कैश पेनी**

❖ साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं, यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं। – **अब्राहम लिंकन**

❖ बुराई चाहे छोटी ही क्यों न हो उसको बिल्कुल भी अपने पास न आने दें क्योंकि अन्य बड़ी बुराईयां निश्चित रूप से उसके पीछे-पीछे आयेंगी। – **बाल्टासर ग्रेशियन**

❖ हम जिस चीज की तलाश कहीं और कर रहे होते हैं। हो सकता है कि वह हमारे आसपास ही हो। – **हार्वी कॉक्स**

❖ जब तक आप न चाहें तब तक आपको कोई भी ईर्ष्यालु, क्रोधी, प्रतिशोधी या लालची नहीं बना सकता। – **नेपोलियन हिल**

❖ त्रुटियां करना मानवीय स्वभाव है, क्षमा कर देना दैवीय।

❖ केवल निष्पक्ष और ईमानदार लोगों के काम मधुर सुगंध देते हैं और फूल के समान खिलते हैं।

❖ झूठ नहीं बोलने का गुण ग्रहण कर लेने से अन्य किसी धर्म कर्म की आवश्यकता नहीं रह जाती।

❖ मनुष्य को जन्म से नहीं बल्कि उसके कर्म से परखा जाना चाहिए। मुख्य बात है सदाचार, अच्छे चरित्रवाला और अच्छे कर्म करने वाला मनुष्य अच्छा होता है और ओछे चरित्र वाला ओछे कर्म वाला व्यक्ति नीच होता है। – **अज्ञात**

फलों के राजा आम

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

गरमी की ऋतु में आते आम,
बागों में बड़े इठलाते आम।

मीठे-मीठे खूब रस-रसीले,
मनमोहक लगते पीले-पीले।

गाँव-शहर चाहे हाट बाजार,
जगह-जगह इनका ही अधिकार।

राजा फलों के कहलाते आम,
गरमी की ऋतु में आते आम।

लगती ठेलों पर इनकी बोली,
सब भर ले जाते अपनी झोली।

कई किस्में और आकार अलग,
मिलता इनको सबसे प्यार अलग।

बड़े चाव से सभी खाते आम,
गरमी की ऋतु में आते आम।

आम

बाल गीत : संजय कुमार

कच्चे-पक्के हरे व पीले,
खट्टे-मीठे आम रसीले।
लंगड़ा हो या चाहे दशहरी,
गाँव का हो या चाहे शहरी।।

यह मई-जून में पकता है,
सबको अच्छा लगता है।
बहुत बड़े यह आता काम,
सबको लगता अच्छा आम।।

पशु-पक्षी व मानव खाते,
हँसते-गाते मौज मनाते।

कमाल की है
डाल्फिन मछली

लेख : परशुराम संबल

डाल्फिन मछलियां दयालु, विनोदी और परोपकारी स्वभाव की होती हैं। जल के अन्दर यदि किसी मानव का जीवन संकट में पड़ जाये और यह बात डाल्फिन को पता चल जाये तो वह जी-जान से तुरन्त उसकी सहायता में जुट जाती है।

यह घटना 1943 की है- फ्लोरिडा के समुद्र तट पर मार्था नाम की एक महिला स्नान कर रही थी। जिस स्थान वह नहा रही थी, वहाँ पर तट कुछ ढलवा था। कमर तक जल में पहुँचकर मार्था जैसे ही डुबकी लगाने को हुई, उसका पैर अचानक फिसल गया और पानी में गिर पड़ी। जल उसके फेफड़ों में भर गया और वह बेहोश हो गई। दुर्भाग्यवश आस-पास कोई भी नहीं था जो सहायता के लिए आता। कुछ देर बाद वहाँ से एक आदमी गुजरा। उसने देखा कि एक मानव शरीर डूबता उठता धीरे-धीरे किनारे की ओर चला आ रहा था। उत्सुकतावश वह उसकी अजीब गति का रहस्य जानने के लिए ठिठक गया। मानव शरीर किनारे की ओर बढ़ता चला आ रहा था। जब वह दर्शक व्यक्ति किनारे के नजदीक गया तो उसने देखा कि एक बड़ी डाल्फिन मछली उस मानव शरीर को पीठ पर लादे, बड़े यत्नपूर्वक समुद्र के किनारे ला रही थी। डाल्फिन ने किनारे लाकर उसे छिछले जल में छोड़ा और विशाल जल राशि में गुम हो गई। यात्री ने जब उसका निरीक्षण किया तो उसे उसमें जीवन लक्षण दिखाई पड़े। उसने उसे तुरन्त बाहर निकालकर पेट के बल लिटाकर फेफड़ों से भरा जल निकाला। इस क्रिया से मार्था की चेतना धीरे-धीरे वापस लौट आई। मार्था ने होश आने पर उस व्यक्ति को अपने डूबने की घटना सुनाई। उस व्यक्ति ने भी मार्था को डाल्फिन द्वारा बचाकर तट पर लाये जाने की आँखों देखी घटना सुनाई। सुनकर मार्था ने अपने भाग्य को सराहा। मार्था के फेफड़ों से पानी निकालने वाला व्यक्ति विज्ञान का विद्वान प्राफेसर डॉ. डी. एरलैंडसन था। उसके मन में यह जिज्ञासा हुई कि डाल्फिन ने संयोगवश मार्था को बचाया या अपनी सहयोगी प्रवृत्ति के कारण उसकी रक्षा की? इस तथ्य को जानने के लिए उसने एक बड़े हौज में एक ऐसी अस्वस्थ मादा डाल्फिन को रखा जिसे सांस लेने के लिए जल सतह तक आने में बड़ी कठिनाई होती थी। उसकी मदद के लिए हौज़ में एक स्वस्थ अपरिचित नर डाल्फिन को छोड़ा गया। वह अस्वस्थ मादा की सहायता करने लगी। नर मछली बार-बार मादा को ऊपर उठाकर सांस लेने में सहयोग प्रदान करती थी। कुछ देर बाद उसी हौज़ में एक और मादा डाल्फिन छोड़ी गई। वह भी सेवा कार्य में जुट गई। दोनों ने मिलकर 48 घंटों तक अस्वस्थ मछली की मदद की। तब कहीं जाकर वह इस योग्य हो सकी कि अपने आप जल सतह तक जाकर सांस ले सके। इस प्रयोग से डाल्फिन मछली की परोपकार वृत्ति पर कोई संदेह नहीं रहा। प्रोफेसर ने डाल्फिन के प्रति यह धारणा बनाई कि सहयोग और परोपकार भावना उसकी कुदरती आदत है।

यह घटना न्यूजीलैंड की है- वहाँ के होकीहांगा बन्दरगाह में 1950 के दशक में एक मानव प्रेमी डाल्फिन जील नाम की एक तेरह वर्षीय बालिका से इतना हिलमिल गई थी कि वह उसे दूर तक अपनी पीठ पर बैठाकर सैर कराकर लाती थी। प्राय: यह यात्रा नजदीक के ओमोपियर ग्राम तट तक होती थी। यहीं तक बन्दरगाह फैला हुआ था। इसके बाद वह जील को लौटा लाती और सुरक्षित किनारे पर छोड़ देती थी। अपनी इस आदत के कारण वह वहाँ के लोगों में 'ओमो' नाम से लोकप्रिय हो गई थी। इस घटना से वह वहाँ इतनी प्रसिद्ध हो गई थी कि न्यूजीलैंड में उसके संरक्षण के लिए एक कानून बनाया गया, जिसमें ओमो को परेशान करना, उसे पकड़ना, शिकार करने की चेष्टा करना घोर अपराध घोषित कर दिया गया। इस कानून के बाद लोग उसके कौतुकों से अपना मनोरंजन तो करते थे, लेकिन उसे छेड़ने की कोशिश नहीं करते थे। ओमो भी अपने करतबों के द्वारा स्नान करने वालों का भरपूर मनोरंजन करती थी। जैसे ही उसे जील दिखाई पड़ती वह तुरन्त उसके पास पहुँचकर उसे जल विहार के लिए ले जाती। एक बार असावधानी के कारण जील उसकी पीठ से लुढ़क पड़ी और गहरे पानी में डूबने लगी। ओमो को जैसे ही पता लगा, उसने तुरन्त डुबकी लगाकर दोबारा जील को अपनी पीठ पर ले लिया। शायद, इस घटना की गम्भीरता का अंदाजा उसने लगा लिया था। इसीलिए वह आगे न जाकर जील को वापस ले आई और तट पर छोड़कर गहरे जल में गुम हो गई। उस दिन के बाद फिर कभी उसके दर्शन नहीं हुए। हो सकता है कि इस घटना से उसे भारी दु:ख पहुँचा हो।

यह घटना भी न्यूजीलैंड की ही है- 'पेलोरस जैक' नाम की दूसरी डाल्फिन वहाँ चर्चा का विषय बनी थी। कई वर्षों तक यह मछली वहाँ के नाविकों का मनोरंजन करती रही। उन्हें अपनी पीठ पर सवार करके वह समुद्र की यात्रा कराती थी। जब वह बूढ़ी हो गई तो एक दिन अचानक 'पेंग्विन' नामक जलयान

से टकराकर बुरी तरह घायल हो गई। बाद में उसकी मृत्यु हो गई।

सन् 1971 में अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य में एलिसबरी परिवार के पास एक पालतू डाल्फिन थी। वह परिवार वालों के साथ वाटर पोलो खेलती थी। कभी-कभी छोटे बच्चे खेलते हुए पानी में गिर पड़ते तो वह उन्हें उठाकर बाहर फेंक देती थी। बच्चों के साथ खूब खेलती और मनोरंजन करती थी।

डाल्फिन छोटी-मोटी शरारतें करने से भी नहीं चूकतीं। ऐसी ही एक मछली ब्रिटेन के 'आयल आफ मेन' के 'पोर्ट एरिन' बन्दरगाह में थी। उसमें लोगों की सहायता और मनोरंजन करने की दोनों ही प्रवृत्तियाँ थी। साथ ही उसमें तीसरा स्वभाव यह था कि वह नाविकों के साथ छेड़छाड़ भी किया करती थी। डोनाल्ड नाम की यह डाल्फिन जब अधिक मस्ती में आती तो नावों का लंगर खोल देती थी। कभी-कभी उन्हें धकेलकर दूर तक समुद्र में ले जाती और वहीं उछलकर तट पर खड़े नाविकों को इस बात का एहसास कराती थीं कि यह उसकी शरारत है।

इस प्रकार डाल्फिनों की सहकारिता, मित्रता, परोपकारिता निश्चय ही सराहने योग्य हैं। मनुष्य तो जीव-जन्तुओं से लाख गुना विकसित और सामर्थ्यवान हैं, फिर उसमें तो ये गुण और भी बढ़-चढ़कर होने चाहिए। ❖

सम्राट की महानता

प्रेरक-प्रसंग : श्यामसुन्दर 'सुमन'

फ्रांस के सम्राट हेनरी चतुर्थ अपनी राजधानी पेरिस में कहीं जा रहे थे। उनके मंत्रीमण्डल के सदस्य और गण्यमान्य व्यक्ति भी उनके साथ थे। उन्हें मार्ग में एक भिखारी मिला। सम्राट को देखकर भिखारी ने अपने सिर से टोपी को उतारा और थोड़ा झुककर अभिवादन किया। फ्रांस में अभिवादन की यही पद्धति प्रचलित है।

भिखारी के अभिवादन के जवाब में सम्राट ने अपना टोप उतारा और थोड़ा झुके। सम्राट को इस तरह अभिवादन करते देखकर सभी लोग अवाक् रह गये। उनके साथियों ने कहा– 'सम्राट! आप देश के सर्वोच्च नागरिक हैं। एक भिखारी का इस प्रकार अभिवादन करना आपको शोभा नहीं देता।'

सम्राट हेनरी ने जवाब दिया– 'नहीं मित्रों! मैंने जो कुछ किया है वह एकदम सही किया है। यदि मैं ऐसा नहीं करता तो दुनिया के लोग समझेंगे कि पेरिस के सम्राट में एक भिखारी जितना भी शिष्टाचार नहीं है। सम्राट से तो पेरिस का भिखारी अच्छा है। विनम्रता से ही व्यक्ति के उच्चकुल का ज्ञान होता है।'

सम्राट का उत्तर सुनकर सभी के सर उनकी महानता के आगे झुक गये।

विनम्रता महान व्यक्तियों का आभूषण है।

काम की बातें

- ❖ सबसे बुरी भावना —— ईर्ष्या करना
- ❖ सबसे बड़ी बाधा —— अधिक बोलना
- ❖ सबसे बड़ा गुरु —— प्रेरणा देने वाला
- ❖ सबसे बड़ी भूल —— समय की बर्बादी
- ❖ सबसे बुरी आदत —— निंदा करना

प्रस्तुति : विकास कुमार

लू से बचने के उपाय

गर्मियों में सबसे बड़ा खतरा लू लगने का होता है। इससे बचाव ही इसका उपचार है।

लू से बचने के लिए निम्न उपाय करें–

- खाली पेट न रहें।
- पानी अधिक पिएं।
- सिर व कानों को ढक कर रखें।
- ककड़ी, प्याज, मौसमी, मूली, दही, मठा, पुदीना, चना का उपयोग करें।
- गर्मी के दिनों में हल्का व शीघ्र पचने वाला भोजन करना चाहिए।
- पानी में नींबू व नमक मिलाकर दिन में दो-तीन बार पीते रहने से लू नहीं लगती।
- लू से बचने के लिए दोपहर के समय बाहर नहीं निकलना चाहिए। अगर बाहर जाना ही पड़े तो सिर व गर्दन को तौलिए या अंगोछे से ढक लेना चाहिए। अंगोछा इस तरह बांधा जाए कि दोनों कान भी पूरी तरह ढक जाएं।

अगर लू लग जाए तो उससे निपटने के पारंपरिक उपचार हैं–

- प्याज का रस हथेलियों और पैर के तलवों पर लगाएं।
- कैरी का पना पुदीना पत्ती डालकर लगातार पियें।
- गीला कपड़ा बार-बार चेहरे पर रखें और कपड़े को बार-बार बदलें।
- लू लगने पर चिकित्सक की सलाह लें।

प्रस्तुति : प्रवीण कुमार

आओ, एक-एक की इकाई जानें

- अणु बम की ऊर्जा शक्ति टी.एन.टी. में मापी जाती है।
- मशीन के कार्य करने की शक्ति हॉर्सपावर (अश्व शक्ति) में नापी जाती है।
- मनुष्य की नाक का रंग ही उसके शरीर की त्वचा का मानक रंग माना जाता है।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा

पढ़ो और हँसो

महात्मा बुद्ध का सत्संग चल रहा था। उसमें एक शिष्य रह-रहकर सो रहा था।

महात्मा बुद्ध ऐसा देखकर बोले, वत्स जीवित हो क्या?

शिष्य ने जल्दी से घबराकर कहा– नहीं भगवन्।

दो ठग एक शहर में ठगी करने चले।

एक ने एक ऊँची बिल्डिंग को देखने लगा। तब तक एक आदमी आया और उसे डांटकर कहा– कौन है, ऊपर क्या देख रहा है?

ठग डरते हुए बोला– कुछ नहीं, देखता हूँ इसमें कितने तल हैं।

आदमी ने कहा– जितने तल गिने हैं प्रत्येक के 50-50 रुपये दो वर्ना पुलिस के हवाले कर दूंगा।

ठग ने कहा– सिर्फ छः तल ही गिना है यह लीजिए 300 रुपया।

वह ठग, साथी ठग के पास आकर कहने लगा– मैंने दस तल 500 रुपये का गिना था और उसे छः तल का 300 रुपया ही दिया बाकी चार तल का 200 रुपया ठग लिया।

रोंदू : यार भोंदू, मैं तेरा फोन कब से मिला रहा हूँ। हर बार फोन से आवाज आती है– 'दिस इज स्विच ऑफ।'

भोंदू : ओहो... यार वो तो मेरी 'हैलो ट्यून' है।

दो आदमी एक चाय की दुकान पर चाय पीने गये।

उनमें से एक ने दुकानदार से कहा– 'टू कप टी'।

दुकानदार इस बात से अपने को अपमानित समझा और बोला– तू कपटी।

ग्राहक : (दुकानदार से) भाई साहब! आप कुर्सियां कैसी बनाते हो, हफ्ते भर में दोनों कुर्सियां टूट गई और आखिर ज्यादा दिन क्यों नहीं चलती?

दुकानदार : माफ करना भाई, कुर्सियां बैठने के लिए होती हैं चलने के लिये नहीं।

रामू समोसे के अन्दर के आलू ही खा रहा था और बाहर के हिस्से को फेंक दे रहा था।

एक व्यक्ति ने उससे कहा– आप समोसे के सिर्फ आलू ही क्यों खा रहे हो?

रामू बोला– क्या बताऊँ भाई साहब! डॉक्टर ने मुझे बाहर की चीजें खाने से मना किया है।

ट्रेन स्टेशन पर रूकी। एक यात्री ने खिड़की के पास बैठे दूसरे यात्री से पूछा– भाई साहब, कौन सा स्टेशन है?

दूसरा यात्री बाहर देखकर बोला– शायद रेलवे स्टेशन है।

– रामअवध राम (गुरैनी)

नन्दन अपने पिता की मृत्यु के गम में रो रहा था। लोगों ने रोने का कारण पूछा। नन्दन ने कहा– मेरे पिता की मृत्यु हो गयी है वे बड़े नेकदिल इन्सान थे। वे हमें बहुत प्यार करते थे।

लोगों ने पूछा वे करते क्या थे?

वे सबसे आगे रहते थे।– नन्दन ने कहा।

लोगों ने फिर पूछा अरे भाई, वो कौन सा काम करते थे?

साइकिल रिक्शा चलाते थे।– नन्दन ने कहा।

मैडम : (पूजा से) बेटा क्या तुम बड़े होकर टीचर बनोगी?
पूजा : जी नहीं।
मैडम : क्यों?
पूजा : मैडम जी, क्या मैं सारी उम्र स्कूल ही आती रहूँगी।

मकान मालिक : (बिल्डर से) नीचे वाले मकान का हिस्सा कितने में बनेगा?
बिल्डर : दस लाख में।
मकान मालिक : और ऊपर वाली मंजिल।
बिल्डर : पाँच लाख में।
मकान मालिक : तो ऐसा करो, तुम पहले ऊपर वाली मंजिल बना दो।

बैंक में ऋण लेने आए एक किसान से बैंक के अधिकारी ने कागजात भरते हुए पूछा– तुम्हारा नाम?

–मुरारी लाल।

पिता का नाम?

–बिहारी लाल।

उम्र?

–120 वर्ष।

क्या कहा?

–जी अगर वे जीवित होते तो इतने ही वर्ष के होते।

राजेश : (विजय से) कल सुबह का नाश्ता आपको मेरे साथ करने में कोई आपत्ति तो नहीं?
विजय : नहीं तो।
राजेश : फिर ठीक है, मैं कल सुबह नौ बजे आपके यहाँ नाश्ते पर आ रहा हूँ।

योगिता : (अर्पिता से) इस टेबल पर मेरी किताब रखी थी कहाँ गई?
अर्पिता : वही भूगोल की किताब, जिसे तुम बड़ी खुश्क किताब कहती थी। उसको मैंने पानी के टब में रख दी है।

– **गरुमीत सिंह (इंदौर)**

सच्चाई बालिका विक्टोरिया की

लेख : रामअवध राम

जो मनुष्य सच्चाई की राह पर चलते हैं। उन्हें बड़े कष्ट सहने पड़ते हैं। पर वे सत्य को कभी नहीं छोड़ते। वे सत्य पर चलते रहते हैं और आगे चलकर महान बनते हैं।

बचपन में ही माता-पिता ने विक्टोरिया को उत्तम गुणों से युक्त एवं शीलवती बनाने का पूरा प्रयत्न किया था। राजकुल में विक्टोरिया ही एक मात्र संतान थी। अत: इंग्लैंड का राजमुकुट उसके सिर को विभूषित करेगा। यह पहले से ही निश्चित था। बड़ी सावधानी से माता लुइसा यह प्रयत्न करती थीं कि उनकी पुत्री में कोई दुर्गुण न आने पाये। विक्टोरिया को खर्च के लिए सप्ताह में एक निश्चित रकम मिलती थी। माता ने उसे कह रखा था कि किसी से कर्ज या उधार नहीं लेना।

एक दिन विक्टोरिया अपनी शिक्षिका के साथ बाजार गयी। तब वह आठ वर्ष की थी। खिलौने की दुकान पर जाकर उसने एक सुन्दर छोटा-सा बक्सा पसन्द किया। उसके पैसे शिक्षिका के पास रहते थे। शिक्षिका ने बताया कि इस सप्ताह के पैसे खत्म हो गए हैं। दुकानदार ने कहा- आप बक्सा ले जाइए, पैसे पीछे आ जाएंगे।

बालिका विक्टोरिया ने कहा- "मैं उधार नहीं लूंगी। मेरी माता ने मुझे मना कर रखा है। आप बक्सा अलग रख दें। अगले सप्ताह जब मुझे पैसे मिलेंगे, मैं उसे ले जाऊंगी।" एक सप्ताह बाद पैसे मिलने पर विक्टोरिया ने वह बक्सा खरीद लिया।

एक दिन विक्टोरिया का मन पढ़ने में नहीं लग रहा था। उसकी शिक्षिका ने कहा- 'थोड़ा पढ़ लो। मैं जल्दी छुट्टी दे दूंगी।'

बालिका ने कहा- 'आज मैं नहीं पढ़ूंगी।'

शिक्षिका बोली- 'मेरी बात मान लो।'

बालिका मचल गयी- 'आज मैं नहीं पढ़ूंगी।'

माता लुइसा ने यह सुन लिया। पर्दा उठाकर कमरे में आ गयीं और पुत्री को डांटने लगीं- 'क्या बकती है।'

शिक्षिका ने कहा- आप नाराज न हो। राजकुमारी पहली बार मेरी बात नहीं मान रही है।

बालिका विक्टोरिया ने तुरन्त कहा- 'आपको याद नहीं है, मैंने दो बार आपकी बात नहीं मानी है।'

बचपन में ही सत्य के पालन का परिणाम था कि अपने राज्यकाल में महारानी विक्टोरिया इतनी विख्यात तथा प्रजाप्रिय हो सकीं। ❖

बाल-सुरक्षा

प्रस्तुति : डॉ. परशुराम शुक्ल

ईश्वर ने जग में मानव को,
सबसे अच्छा माना।
अपने जैसा उसे बना कर,
कहा धरा महकाना।।

एक नया वरदान समझकर,
माँ बच्चे को सेती।
बच्चे की मुस्कान हमेशा,
माता को सुख देती।।

दूध पिलाती, मालिश करती,
गीत सुना नहलाती।
दिन भर करती प्यार रात में,
अपने पास सुलाती।।

सपने मधुर देखती है वह,
बच्चे के जीवन के।
जैसे माली बाट जोहता,
खिलें फूल उपवन के।।

रह सकते हैं सुखी तभी जब,
सब बच्चे मुस्काएं।
भेद बिना ये बस्ता लेकर,
शाला पढ़ने जाएँ।।

ईश्वर की अनमोल भेंट को,
समझो और बचाओ।
बाल सुरक्षा करके अपना,
यह कर्त्तव्य निभाओ।।

आपके पत्र मिले

मेरा नाम आरती है और मुझे हँसती दुनिया को पढ़ने का बहुत शौक है। मैं हँसती दुनिया का बड़े बेसब्री से इन्तजार करती हूँ। चित्रकथाओं एवं 'पढ़ो और हँसो' सभी को अच्छे से पढ़ती हूँ। मुझे बहुत कुछ हँसती दुनिया में से सीखने को मिलता है।

इसमें प्रकाशित कहानियों और कविताओं को रुचि एवं लगन के साथ पढ़ती हूँ तथा इसमें प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक होती है।

– आरती (नानौता, सहारनपुर)

मार्च अंक समय से पहले प्राप्त हुआ। हँसती दुनिया हमेशा समय से पहले चलती है। यह बहुत बड़ी सीख है कि हमें हर काम समय अनुसार कर लेना चाहिये। मुख-पृष्ठ पर ही होली की खुशी नजर आ रही है। अन्दर भी काफी सामग्री त्यौहार के अनुसार ही है।

'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' में बड़े ही सरल ढंग से वैज्ञानिक जानकारी दी जाती है। 'किट्टी' अब बड़ी सयानी हो गई है। छोटी कहानी में बड़ी सीख दे जाती है। **– अमिता मोहन (भटिंडा)**

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मैं हँसती दुनिया के आने का बेसब्री से इन्तजार करता हूँ। इसमें हमें कहानियां तथा शिक्षाप्रद प्रेरक-प्रसंग बहुत अच्छे लगते हैं।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

मैं और मेरा परिवार हँसती दुनिया का बेसब्री से इन्तजार करते हैं। हमें इसमें सभी बातें अच्छी लगती हैं मगर कुछ बातें ऐसी हैं कि बहुत ज्यादा अच्छी लगती हैं और मैं उन बातों को अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करती हूँ। हँसती दुनिया पढ़कर मुझे बहुत संतुष्टि महसूस होती है।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

पर्यावरण तो धरती का परिधान है

पर्यावरण तो इस धरती का परिधान है,
वृक्ष, वायु, जल, पशु पक्षी सब ईश्वर का वरदान हैं।
इन्हें बनाया हम सबकी सेवा के खातिर,
लेकिन इनका शोषण करते
हम केवल अपने ही खातिर।

जरूरत पूरी हो सकती है,
पर लालच का नहीं विधान है।
पर्यावरण तो धरती का परिधान है।।

धूल धुआं बढ़ता जाता है,
जंगल कटते जाते हैं।
पशु पक्षी और जल पीने का,
दिन दिन घटते जाते हैं।

वृक्ष और पशु पक्षी जल थल,
सब मानव के मीत हैं।
स्वच्छ वायु और स्वच्छ नीर,
ये जीवन के संगीत हैं।

हम इन मित्रों का शोषण करते,
घोर यही अज्ञान है।
पर्यावरण तो धरती का परिधान है।।

प्रस्तुति : रूपनारायण काबरा (जयपुर)

अप्रैल अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **हीर कलवानी** — **10 वर्ष**
   झूलेलाल सोसाइटी,
   एफसीआई गोदाम के सामने,
   गोधरा (गुजरात)

2. **हिमांशु पाण्डेय** — **13 वर्ष**
   गाँव : छोटा मिर्जापुर,
   पोस्ट : भिखारीपुर पहितीपुर,
   जिला : अम्बेडकर नगर (यू.पी.)

3. **प्रथम** — **12 वर्ष**
   बी-11, यूबीडीसी पावर कॉलोनी,
   मलिकपुर, पठानकोट (पंजाब)

4. **यशिका बागवानी** — **11 वर्ष**
   लक्ष्मी अपार्टमेंट, खोलवा रोड,
   भाटापारा (छत्तीसगढ़)

5. **राहुल मालाकार** — **13 वर्ष**
   गाँव : छातापुर, पोस्ट : सुरपतगंज,
   जिला : सुपौल (बिहार)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

रिद्धि सैनी (राजनगर, दिल्ली), यश, मंधीर, हार्दिक, हार्विका, रौनक, प्रियाशा, हार्दिक कुमार, चारूल, विश्वा (भाटापारा, छत्तीसगढ़), आशीष, वंशिका, उन्नति, शिवम, दक्षा, गीतांजलि (भुज, गुजरात) कुश, चाँदनी, नैतिक, हार्दिक, लहर मूलचंदानी, यश, आरूही भोजवानी, मुस्कान, सुमित रूपानी, आयुषि, परी असनानी, कृषा, मोक्ष, निहारिका, नमन, रैना, मीत बलवानी, यशिका देवजानी, शिव, अनंत बम्बानी, हनिशा, जीविका, भविका रामचंदानी, अंशिका, दक्ष पंज. ली, मुस्कान लालवानी, परी, पीयूष समियानी, नम्या, कुंज बुधवानी, मंथन, कुश, कृष्णा, प्रियंका, प्रनित जोशी (गोधरा)।

जून अंक रंग भरो

पृष्ठ 50 पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 25 जून तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अगस्त अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।
- कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : .... आयु : ....

पिता का नाम : ....

पूरा पता : ....

....

.... पिन कोड : ....

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
IT'S LIVE,
DOWNLOAD NOW
SNM
App Store
Google Play
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
सुनो तराने
नए पुराने
Nirankari Radio
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
महफ़िल ए रूहानियत
Mehfil-E-Ruhaniyat
Special programme
SV
SOUL VIBES
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on Last Friday of every month
Voice DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

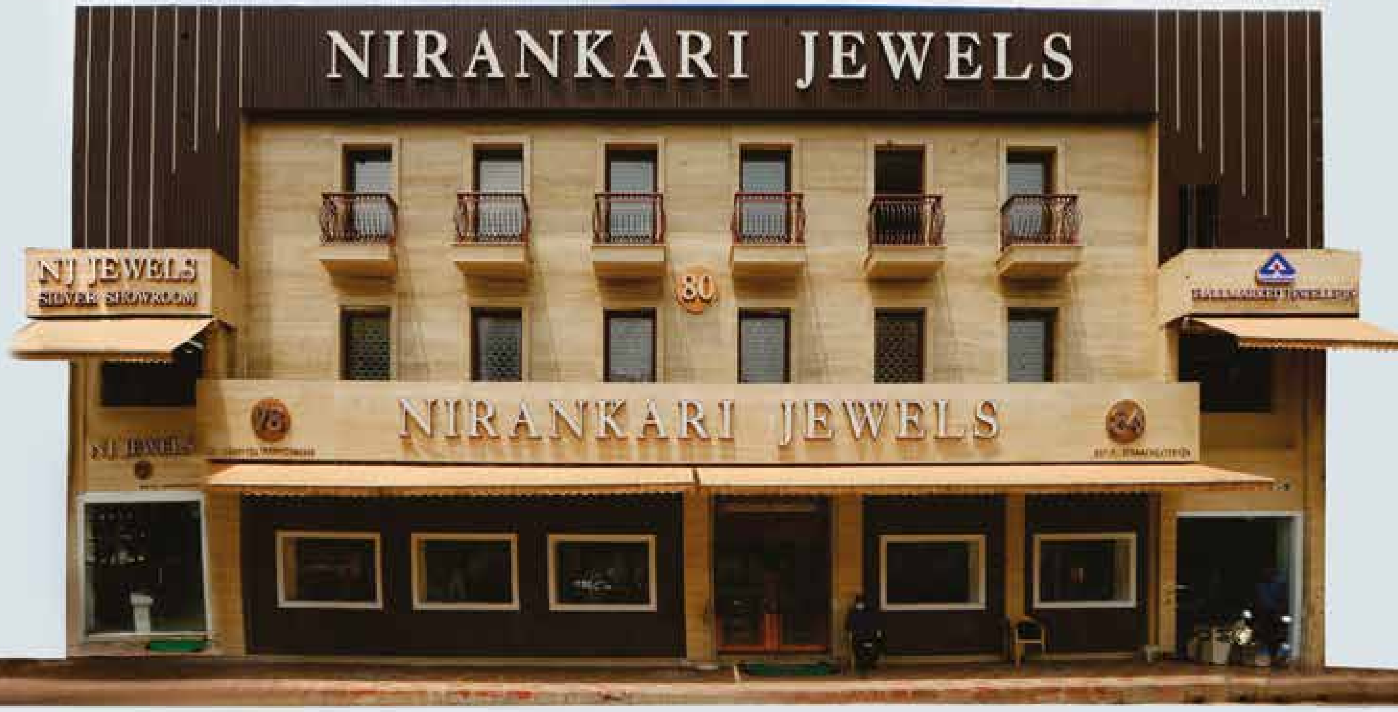

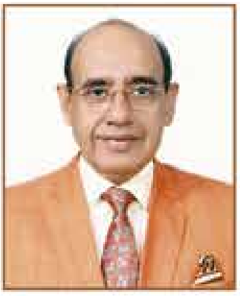

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed
Customer Care : **9818883394**